दैनिक
बुद्ध का संदेश
हिन्दी समाचार पत्र
एक विश्वास....
बलरामपुर
बुधवार, 21 जनवरी 2026
वर्ष: 05 अंक : 109 पृष्ठ: 8
आमंत्रण मूल्य 2/–रूपया
लखनऊ, कानपुर, कन्नौज, बरेली, सीतापुर, सोनभद्र, गोण्डा, बाराबंकी, बलरामपुर, श्रावस्ती, बहराइच, अम्बेडकरनगर, फैजाबाद, बस्ती, संतकबीरनगर, गोरखपुर, कुशीनगर, देवरिया, महराजगंज, रामपुर, रायबरेली, सिद्धार्थनगर में एक साथ प्रसारित।
सम्पादक : राजेश शर्मा
दैनिक बुद्ध का संदेश 8795951917, 9415163471 @budhakasandesh budhakasandeshnews@gmail.com www.budhakasandesh.com
उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार (DAVP) से सरकारी विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

बॉर्डर 2 धमाका!
रिलीज से प...8

शहरी नक्सलवाद और घुसपैठियों पर पीएम मोदी का डबल अटैक, बोले– ये अंतरराष्ट्रीय स साजिश है

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को शहरी नक्सलवाद के बढ़ते प्रभाव पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इसने अंतरराष्ट्रीय आयाम हासिल कर लिए हैं और यह भारत के खिलाफ काम करना जारी रखे हुए है। राजधानी में भाजपा के राष्ट्रीय मुख्यालय में पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए, जहां नितिन नबीन ने राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभाला, पीएम मोदी ने कहा कि एक और बड़ी चुनौती शहरी नक्सलवाद है। शहरी नक्सलवाद का दायरा अंतरराष्ट्रीय होता जा रहा है। अगर वे साल में एक–दो बार भी मोदी के बारे में कुछ सकारात्मक ट्वीट करते हैं, या टीवी पर कुछ सकारात्मक कहते हैं, या अखबार में कुछ सकारात्मक लिखते हैं, तो कुछ पत्रकार उन्हें इतना अपमानित करते हैं कि उनका पीछा किया जाता है और उन्हें अछूत बना दिया जाता है। उन्हें इस तरह चुप करा

दिया जाता है कि वे फिर कभी बोल न सकें। यही शहरी नक्सलवाद का तरीका है। मोदी ने आगे कहा कि वर्षों से ऐसे समूह भाजपा को अलग–थलग करते रहे हैं और देश भर में पार्टी सदस्यों को अछूतों की तरह मानते रहे हैं। ध्अब देश इन शहरी नक्सलियों की हरकतों को समझ रहा है। शहरी नक्सली लगातार भारत को नुकसान पहुंचाने के लिए काम कर रहे है। आज सुबह प्रधानमंत्री मोदी ने देश भर में घुसपैठियों के बारे में चेतावनी देते हुए कहा कि हमें हर चुनौती का पूरी ताकत से सामना करना होगा। आज देश के सामने सबसे बड़ी चुनौती घुसपैठियों की है। दुनिया में कोई भी देश अपने देश में घुसपैठियों को स्वीकार नहीं करता, और भारत भी घुसपैठियों को अपने गरीबों और युवाओं के अधिकारों को छीनने की अनुमति नहीं दे सकता। विपक्षी दलों पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि घुसपैठिए देश की सुरक्षा के लिए बहुत बड़ा खतरा हैंय उनकी पहचान करना और उन्हें उनके देशों में वापस भेजना बेहद जरूरी है। इसके अलावा, जो राजनीतिक दल वोट बैंक की राजनीति के लिए घुसपैठियों को संरक्षण दे रहे हैं, उन्हें पूरी ताकत से जनता के सामने बेनकाब किया जाना चाहिए। इसी बीच, नितिन नबीन ने आज सुबह भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में औपचारिक रूप से पदभार ग्रहण किया।

बीएमसी चुनाव: 30 जनवरी को बीजेपी का मेयर तय, शिंदे गुट को नहीं मिलेगा पद?

बृहन्मुंबई नगर निगम (बीएमसी) में 30 जनवरी को महापौर चुनाव हो सकते हैं। इस चुनाव के बाद भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को नया महापौर मिलने की संभावना है। सूत्रों से यह भी संकेत मिलता है कि भाजपा शिंदे गुट को महापौर पद की पेशकश नहीं करेगी। बीएमसी आयुक्त महापौर चुनाव का औपचारिक कार्यक्रम घोषित करेंगे।

इसमें महापौर के चुनाव के लिए श्रेणी तय करने हेतु लॉटरी निकाली जाएगी, जिसके बाद महापौर और उप महापौर दोनों के लिए मतदान होगा। बीएमसी में भाजपा और शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना की संयुक्त शक्ति 118 पार्षदों की है, जो बहुमत के लिए आवश्यक 114 सीटों से चार अधिक है। अजीत पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी), जिसके पास तीन सीटें हैं और जो महायुति गठबंधन का हिस्सा है, के समर्थन से यह संख्या बढ़कर 121 हो जाती है, जिससे सत्तारूढ़ गठबंधन की स्थिति और मजबूत हो जाती है।

विपक्ष बहुमत से पीछे रह गया

विपक्षी दल की ओर से उद्धव ठाकरे की शिवसेना (यूबीटी) को 65 सीटें मिली हैं। उसने राज ठाकरे की महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (एमएनएस) के साथ गठबंधन में चुनाव लड़ा था, जिसे केवल छह सीटें ही मिल सकीं। कांग्रेस ने 24 सीटें जीतीं, जबकि शरद पवार की एनसीपी (एसपी) को सिर्फ एक सीट मिली। इन सभी पार्टियों को मिलाकर भी कुल 96 सीटें मिली हैं, जो बहुमत के लिए आवश्यक सीमा से काफी कम हैं।

एमवीए में मतभेद

शिवसेना (यूबीटी), कांग्रेस और एनसीपी (एसपी) महा विकास अघाड़ी (एमवीए) के घटक दल हैं, लेकिन कांग्रेस और एनसीपी (एसपी) ने बीएमसी चुनाव स्वतंत्र रूप से लड़ने का विकल्प चुना। शिवसेना (यूबीटी) ने कांग्रेस को एमएनएस के साथ गठबंधन में शामिल होने का प्रस्ताव दिया था, लेकिन इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप एक खंडित विपक्षी मोर्चा बन गया।

लोक सभा में एमपी की गैरहाजिरी पर लगेगी लगाम,

Speaker Om Birla ने Budget Session से बदला नियम

संसदीय कार्यवाही में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने के उद्देश्य से, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने घोषणा की है कि अब सांसदों की उपस्थिति तभी दर्ज की जाएगी जब वे सदन में अपने निर्धारित सीटों पर शारीरिक रूप से उपस्थित होंगे। यह नया नियम आगामी बजट सत्र से प्रभावी होगा। बिरला ने 86वें अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन के दौरान मीडियाकर्मियों से संक्षिप्त बातचीत में यह जानकारी दी। लोकसभा अध्यक्ष ने सूचित किया कि संसद परिसर में सदन कक्ष के बाहर से सदस्यों को उपस्थिति दर्ज करने की पूर्व व्यवस्था को समाप्त किया जा रहा है, जो विधायी

अनुशासन की आवश्यकता को रेखांकित करता है। बिरला ने कहा कि अब उपस्थिति तभी दर्ज की जाएगी जब सदस्य सदन के अंदर बैठे होंगे। पारदर्शिता और जवाबदेही को मजबूत करने के लिए यह कदम उठाया जा रहा है। साथ ही, सदन स्थगित होने के बाद कोई भी सदस्य उपस्थिति दर्ज नहीं कर सकता, भले ही यह व्यवधान के कारण हो। इस कदम से सदस्यों को प्रतिदिन कार्यवाही की शुरुआत से सदन में उपस्थित होने के लिए प्रोत्साहन मिलने की संभावना है। अध्यक्ष ने कहा कि यह निर्णय यह सुनिश्चित करने के लिए लिया गया है कि उपस्थिति संसद परिसर में मात्र उपस्थिति के बजाय सदन की कार्यवाही में सक्रिय भागीदारी को सटीक रूप से दर्शाए। उपस्थिति को सदन में शारीरिक उपस्थिति से जोड़कर, इस पहल का उद्देश्य सदस्यों को वाद–विवाद और चर्चाओं के दौरान उपस्थित रहने के लिए प्रोत्साहित करना है।

नितिन नबीन ने संभाली बीजेपी की कमान

पीएम मोदी ने नए राष्ट्रीय अध्यक्ष के परिवार से भी की मुलाकात

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को राष्ट्रीय राजधानी में भाजपा मुख्यालय में नव निर्वाचित भाजपा अध्यक्ष नितिन नबीन के परिवार से मुलाकात की और उनसे बातचीत की। नितिन नबीन ने पदभार ग्रहण किया। इस अवसर पर पीएम मोदी ने नितिन नबीन के साथ मिठाई भी बांटी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी और जेपी नड्डा भी इस अवसर पर उपस्थित थे। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा, दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और कई अन्य भाजपा नेताओं ने नितिन नबीन को बधाई दी। आज भाजपा नेता नितिन नबीन ने औपचारिक रूप से भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में पदभार ग्रहण किया। पार्टी संकल्प का क्षण है। आज मैं केवल

मुख्यालय में नेताओं और कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए नबीन ने कहा कि वे केवल पदभार ग्रहण नहीं कर रहे हैं, बल्कि पार्टी के राष्ट्रवादी आंदोलन की विचारधारा, परंपराओं और जिम्मेदारी को अपना रहे हैं। उन्होंने वरिष्ठ नेताओं और पीएम मोदी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए 14 करोड़ भारतीयों के सामूहिक प्रयास को रेखांकित किया, जो एक विकसित भारत की दिशा में काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज का क्षण मेरे लिए पद ग्रहण नहीं कर रहा हूँ। मैं इस पार्टी के राष्ट्रवादी आंदोलन की विचारधारा, परंपराओं और जिम्मेदारी को स्वीकार कर रहा हूँ, और इस अवसर पर मैं अपने सभी वरिष्ठ सहयोगियों को भी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ..आज 14 करोड़ भारतीय एक विकसित भारत के सपने से जुड़ रहे हैं और देश को आगे ले जाने के लिए काम कर रहे हैं। इसके लिए मैं प्रधानमंत्री जी का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। वरिष्ठ भारतीय राजनीतिज्ञ नवीन बिहार विधानसभा के पाँच बार सदस्य रह चुके हैं और बिहार सरकार में पूर्व मंत्री भी रह चुके हैं। वे अपनी निरंतर संगठनात्मक कुशलता और प्रशासनिक अनुभव के लिए व्यापक रूप से जाने जाते हैं। 23 मई, 1980 को झारखंड के रांची में जन्मे नबीन ने कम उम्र में ही चुनावी राजनीति में प्रवेश किया और पहली बार 2006 में पटना पश्चिम विधानसभा क्षेत्र से बिहार विधानसभा के लिए चुने गए। 2010 से, नबीन लगातार बांकीपुर विधानसभा क्षेत्र से निर्वाचित होते रहे हैं, उन्होंने 2010, 2015, 2020 और 2025 में जीत हासिल की, इस प्रकार वे पांच बार के विधायक बन गए। उन्होंने बिहार सरकार में कैबिनेट मंत्री के रूप में सड़क निर्माण, शहरी विकास एवं आवास और कानून जैसे महत्वपूर्ण विभागों का भी कार्यभार संभाला है।

जगन्नाथ मंदिर को बम से उड़ाने की मिली धमकीय मचा हड़कंप, सुरक्षा एजेंसियां हाई अलर्ट पर

अनुगुल। ओडिशा के पवित्र धाम पुरी स्थित श्री जगन्नाथ मंदिर को बम से उड़ाने की धमकी मिलने के बाद हड़कंप मच गया है। विश्व प्रसिद्ध इस 12वीं सदी के मंदिर की सुरक्षा को लेकर प्रशासन पूरी तरह मुस्तैद हो गया है। धमकी भरी सूचना मिलने के तुरंत बाद सुरक्षा एजेंसियों को हाई अलर्ट पर रखा गया है और मंदिर परिसर के भीतर व बाहर निगरानी बढ़ा दी गई है। सूत्रों के अनुसार, धमकी मिलने के बाद जिला पुलिस और मंदिर प्रशासन ने त्वरित कार्रवाई की। बम निरोधक दस्ते और डॉग स्क्वाड की मदद से मंदिर के आसपास के संवेदनशील इलाकों की जांच की जा रही है। हालांकि, श्रद्धालुओं के दर्शन पर कोई रोक नहीं लगाई गई है, लेकिन मंदिर में प्रवेश करने वाले प्रत्येक व्यक्ति की गहन तलाशी ली जा रही है।

मैगी, बासमती चावल, कई महीनों का पूरा इंतजाम

12,000 फीट पर जैश ने बना लिया था बंकर, जानिए कैसे सेना ने उड़ा दिया

श्रीनगर। किश्तवार के ऊंचे पहाड़ों में पाकिस्तान स्थित जैश–ए–मोहम्मद (जेईएम) से जुड़े आतंकवादियों ने लंबे समय तक छिपने की योजना बनाई थी। पत्थरों की कतारों से सावधानीपूर्वक सुरक्षित किए गए एक मजबूत बंकर में महीनों तक रहने के लिए पर्याप्त सामान जमा था, जो एक लंबे समय तक छिपने की तैयारी का संकेत देता है। सेना ने एक गहन आतंकवाद विरोधी अभियान के बाद इस बंकर का भंडाफोड़ किया, जिसमें एक कमांडो ने शहीद हो गए और कई अन्य घायल हो गए। खबरों के अनुसार, बंकर से कम से कम 50 पैकेट नूडल्स, टमाटर और आलू का एक पूरा क्रेट, 15 प्रकार के मसाले, 10 किलो बासमती चावल के दो बोरे, दाल, गेहूं और बाजरे के बोरे, दो बड़े एलपीजी सिलेंडर, बर्नर और सूखी लकड़ी बरामद की गई। गोलीबारी में गंभीर रूप से घायल हुए एक पैराट्रूपर ने दम तोड़ दिया। चल रहे तलाशी अभियान के दौरान राशन से भरे संदिग्ध आतंकी ठिकाने का पता चला। जैश–ए–मोहम्मद

से जुड़े माने जा रहे दो से तीन आतंकवादियों के इलाके में छिपे होने का संदेह है। रविवार देर रात रोके गए इस अभियान को सोमवार तड़के फिर से शुरू किया गया। सुरक्षा बलों द्वारा आतंकवादियों से संपर्क स्थापित करने के बाद रविवार को चत्रू क्षेत्र के मन्द्रल–सिंहपोरा के पास सोनार गांव में अभियान शुरू किया गया। मुठभेड़ हुई, जिसमें आठ सैनिक घायल हो गए, जिनमें से अधिकांश अचानक हुए ग्रेनेड हमले के छर्रों से घायल हुए थे। अधिकारियों ने बताया कि दुर्गम भूभाग, घनी वनस्पति और खड़ी ढलानों के कारण दृश्यता और आवागमन में भारी बाधा उत्पन्न हुई, जिसके चलते अभियान को रात भर के लिए रोकना पड़ा। एक्स पर एक पोस्ट में सेना के व्हाइट नाइट कोर ने बताया कि चत्रू क्षेत्र में ऑपरेशन त्राशी–I जारी है। पोस्ट में कहा गया कि घेराबंदी और कड़ी कर दी गई है और तलाशी अभियान का दायरा बढ़ा दिया गया है। पुलिस और सीआरपीएफ के जवान इलाके में तैनात हैं और स्थिति को नियंत्रण में रखने के लिए तैनात हैं। अधिकारियों ने बताया कि बताया कि सेना, पुलिस और अर्धसैनिक बलों की कई टीमें ड्रोन और खोजी कुत्तों की मदद से इलाके की तलाशी ले रही हैं और आतंकवादियों को भागने से रोकने के लिए कड़ी सुरक्षा घेरा बनाए हुए हैं। इसी बीच, घायल सैनिकों में से एक, हवलदार गजेंद्र सिंह ने 18 और 19 जनवरी की दरमियानी रात को जम्मू के एक सैन्य अस्पताल में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। सेना ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि व्हाइट नाइट कोर के जनरल ऑफिसर कमांडिंग और सभी रैंक विशेष बलों के हवलदार गजेंद्र सिंह को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, जिन्होंने चल रहे ऑपरेशन त्राशी–I के दौरान सिंहपोरा क्षेत्र में आतंकवाद विरोधी अभियान को बहादुरी से अंजाम देते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया।

भारत एआई में अमेरिका–चीन से पीछे नहींश, दावोस में आईटी मंत्री और अरविंद कृष्णा का दावा

नई दिल्ली। विश्व आर्थिक मंच में केंद्रीय आईटी मंत्री अश्विनी वैष्णव और आईबीएम सीईओ अरविंद कृष्णा ने भारत के एआई क्षेत्र में पिछड़ने की आलोचना को खारिज किया। एनडीटीवी के मुताबिक, कृष्णा ने कहा कि भारत उद्यम एआई में मजबूत है और मौलिक शोध की कमी का आरोप गलत है। उन्होंने छोटे, संप्रभु डेटा–आधारित मॉडल बनाने की वकालत की, जो बड़े एलएलएम से सस्ते और प्रभावी होंगे। वहीं, वैष्णव ने रक्षा क्षेत्र में स्वतंत्र एआई मॉडल के सफल परिणाम बताए। दोनों ने जोर दिया कि अगला बड़ा नवाचार आकार से नहीं, बल्कि इंजीनियरिंग और गणित से आएगा। भारत इस बदलाव से बड़ा लाभ उठा सकता है। दोनों नेताओं ने सहमति जताई कि नवाचार आकार पर नहीं, बल्कि कुशलता पर निर्भर करता है। 50 अरब पैरामीटर वाले मॉडल 100 गुना सस्ते चलते हैं और इससे नवाचार की अपार संभावनाएं खुलती हैं। यह चर्चा दावोस में भारत की मजबूत उपस्थिति के बीच हुई, जहां एआई, सेमीकंडक्टर और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर पर फोकस है।

छात्रों के भविष्य से खिलवाड़ पर जेयूटी में जांच के लिए पहुंची सीबीआई, प्रारंभिक जांच के दौरान मिले भ्रष्टाचार के संकेत

रांची। सीबीआई रांची की टीम मंगलवार को झारखंड यूनिवर्सिटी आफ टेक्नोलोजी (जेयूटी) के नामकुम स्थित परिसर में पहुंची और पूरे मामले की जांच की। सीबीआई को प्रारंभिक जांच में उक्त विश्वविद्यालय में भ्रष्टाचार के संकेत मिले हैं। झारखंड हाई कोर्ट के आदेश पर सीबीआई पूरे मामले की जांच कर रही है। सीबीआई अब जेयूटी व अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआइसीटीई) की भूमिका जांच कर रही है। पिछले दिनों झारखंड हाई कोर्ट में धनबाद इंस्टीच्यूट आफ टेक्नोलोजी की याचिका पर न्यायाधीश राजेश कुमार ने सुनवाई बाद सीबीआई को पूरे मामले की जांच का आदेश दिया था। इस मामले में तीन फरवरी को अगली सुनवाई होनी है। धनबाद इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलोजी ने दायर याचिका में आरोप लगाया गया था कि एआईसीटीई ने संस्थान को 30 अप्रैल 2025 को 2025–26 के शैक्षणिक सत्र के लिए मान्यता दी, लेकिन जेयूटी ने छात्रों को परीक्षा में बैठने से रोक दिया, जिससे उनके भविष्य को खतरा पैदा हो गया।

रायबरेली से राहुल गांधी की हुंकार

मनरेगा कानून बदलकर पीएम मोदी छीन रहे गरीबों का हक

रायबरेली। लोकसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने एमजीएनआरईजीए अधिनियम को निरस्त करने के फैसले पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर तीखा हमला बोलते हुए उन पर गरीबों की बजाय नौकरशाहों को प्राथमिकता देने का आरोप लगाया। एमजीएनआरईजीए अधिनियम को निरस्त करने के मुद्दे पर मीडिया से बात करते हुए राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर सत्ता का केंद्रीकरण करके उसे नौकरशाही के हाथों में सौंपने और गरीब नागरिकों को भूखा मरने के लिए छोड़ने का आरोप लगाया। राहुल गांधी कहा कि एमजीएनआरईजीए का उद्देश्य आर्थिक जिम्मेदारी लेना और बेरोजगार ग्रामीण नागरिकों को न्यूनतम मजदूरी प्रदान करना था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ऐसा नहीं चाहतेय वे सत्ता का केंद्रीकरण

करके उसे नौकरशाही के हाथों में सौंपना चाहते हैं और गरीब नागरिकों को भूखा मरने के लिए छोड़ देना चाहते हैं। अधिनियम में संशोधन के साथ ही गरीबों का संरक्षण समाप्त हो गया है। इसलिए कांग्रेस देशव्यापी एमजीएनआरईजीए बचाओ अभियान चला रही है... प्रधानमंत्री चाहते हैं कि पूरे देश की अर्थव्यवस्था अंबानी और अडानी के हाथों में चली जाए, जबकि हम गरीबों की मदद करने की कोशिश कर रहे हैं। राहुल गांधी ने संशोधित वीबी–जी राम–जी अधिनियम से महात्मा गांधी का नाम हटाए जाने की भी निंदा की। कांग्रेस सांसद ने आज राजीव गांधी क्रिकेट स्टेडियम में यूथ स्पोर्ट्स एकेडमी रायबरेली द्वारा आयोजित रायबरेली प्रीमियर लीग का उद्घाटन किया। कांग्रेस सांसद महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (एमजीएनआरईजीए) को रद्द किए जाने के विरोध में जनसभा को संबोधित करने और पार्टी के वरिष्ठ नेताओं से मुलाकात करने के लिए अपने संसदीय क्षेत्र रायबरेली के दो दिवसीय दौरे पर हैं।

तो मेरे पति मुझे मार डालेंगे: सुनीता विलियम्स ने ऐसा क्यों कहा?

नई दिल्ली। नासा की पूर्व अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स, जिन्होंने बोइंग स्टारलाइनर मिशन में अप्रत्याशित रूप से साढ़े नौ महीने अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) पर बिताए, ने अपनी वापसी के बाद एक खास इंटरव्यू में खुलकर बात की। मार्च 2025 में स्पेसएक्स ड्रैगन कैप्सूल से पृथ्वी पर लौटने के बाद यह उनकी पहली बातचीत है, जिसमें उन्होंने अपने लंबे मिशन की चुनौतियों, चंद्रमा पर जाने की इच्छा और भारतीय विरासत से जुड़े भावनात्मक पहलुओं पर प्रकाश डाला।

हिंदू अपने संस्कृति का ज्ञान रखे:जितेंद्र जी

दैनिक बुद्ध का संदेश

बलरामपुर। पचपेड़वा सरस्वती शिशु मंदिर में आयोजित हिंदू सम्मेलन में मुख्य वक्ता जिला प्रचारक

जितेंद्र जी ने कहा कि माता पिता अपने बच्चों को अपने संस्कृति के बारे में बताए, कुटुम्ब के साथ बैठक करे, अपने परिवार के साथ बैठकर भोजन करे,जो अपने परिवार को एक जुट कर लिया तो समझो हिंदू समाज एकजुट हो गया। हिंदू सम्मेलन में उपस्थित सभी लोगो से वेद ,शास्त्र, पुराण और चारो धाम के बारे में जानकारी लिया कि किस किस को अपने संस्कृति के बारे जानकारी हैऔर महापुरुषों के बारे मे भी बताया। मुख्य अतिथि राम कृपाल शुक्ल ने भी हिंदुओ को एक जुट और महापुरुषों के आदर्शो पर चलने की बात राम चरित मानस के अंश से सुनाया। हिंदू सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ समाज सेवी विनायक प्रसाद शुक्ल ने कहा कि यदि हिंदू अपने वाणी पर अंकुश लगा कर एक दूसरे पर बेवजह टिप्पणी करना छोड़ दे मधुर वाणी बोले तो हिंदू एक जुट हो गया।कार्यक्रम के बाद भारत माता की आरती गा कर किया गया। हिंदू सम्मेलन में जिला कार्यवाह किरीट मणि,जिला सह कार्यवाह, सुभाष, विस्तारक रवि ,खंड कार्यवाह गोविंद, ब्लॉक प्रमुख मनोज तिवारी,भाजपा नेता राम सरन गुप्ता,पत्रकार अरुण देव पाठक ,कामेश्वर मिश्रा, बबलू चतुर्वेदी, संजय त्रिपाठी, प्रधानाचार्य मनीष सहित सकल हिंदू समाज शामिल हुए।

बूथ कार्यकर्ताओं के सम्मान से गूंजा बघमरा, पूर्व विधायक ने संगठनात्मक मजबूती का दिया मंत्र

दैनिक बुद्ध का संदेश

डुमरियागंज/सिद्धार्थनगर। तहसील क्षेत्र के बघमरा स्थित दुर्गा मंदिर परिसर में मंगलवार को भाजपा भारतभारी मंडल द्वारा बूथ कार्यकर्ताओं के सम्मान में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मंडल व बूथ स्तर के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को एक मंच पर सम्मानित कर उनके समर्पण और परिश्रम को सराहा गया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित पूर्व विधायक राघवेन्द्र प्रताप सिंह ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सबसे बड़ी ताकत उसका कर्मठ और निष्ठावान कार्यकर्ता है। भाजपा में प्रत्येक कार्यकर्ता को उसके कार्य के आधार पर आगे बढ़ने का अवसर मिलता है, यही वजह है कि पार्टी की पहचान अन्य दलों से अलग है। उन्होंने कहा कि बूथ स्तर पर ईमानदारी, अनुशासन और लगन से किया गया कार्य संगठन को मजबूत करता है और यही परिश्रम भविष्य में बड़े दायित्वों का मार्ग प्रशस्त करता है। कार्यकर्ताओं से उन्होंने पार्टी की नीतियों तथा केंद्र व प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को जन–जन तक पहुंचाने का आह्वान किया। पूर्व विधायक ने मतदाता सूची पुनरीक्षण कार्यक्रम (एसआईआर) पर विशेष जोर देते हुए कहा कि प्रत्येक पात्र नागरिक का नाम मतदाता सूची में दर्ज हो, यह सुनिश्चित करना कार्यकर्ताओं की सामूहिक जिम्मेदारी है। कोई भी योग्य मतदाता छूटे नहीं, इसके लिए बूथ स्तर पर सक्रियता बेहद आवश्यक है। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक युवराज ने किया। समारोह में चंद्र प्रकाश वर्मा, अवधेश चौधरी, सुनील पाण्डेय, रामप्रकाश पाण्डेय, रविन्द्र शर्मा, इंद्रजीत चौधरी, रवि पासवान, रामू गौतम सहित बड़ी संख्या में भाजपा पदाधिकारी और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

मनरेगा बचाओ संग्राम के तहत सदर विकासखंड में कांग्रेस की चौपालें आयोजित

दैनिक बुद्ध का संदेश

बलरामपुर। आज दिनांक 20 जनवरी 2026 को मनरेगा

बचाओ संग्राम कार्यक्रम के तहत जनपद बलरामपुर के सदर विकासखंड अंतर्गत ग्राम पंचायत धुसहा, ग्राम पंचायत नंदनगर ठठिया एवं ग्राम पंचायत खजुरिया में कांग्रेस पार्टी द्वारा चौपालों का आयोजन किया गया। चौपालों के माध्यम से ग्रामीणों को मनरेगा योजना में सरकार द्वारा किए जा रहे बदलावों की विस्तृत जानकारी दी गई। इस अवसर पर ए०आई०सी०सी० सदस्य एवं पूर्व ब्लॉक प्रमुख राजबहादुर यादव ने कहा कि केंद्र एवं प्रदेश की सरकार सुनियोजित तरीके से मनरेगा कानून में लगातार बदलाव कर इस जनकल्याणकारी योजना को कमजोर करने और अंततः समाप्त करने का प्रयास कर रही है। मनरेगा गरीब, मजदूर और ग्रामीण जनता के जीवन का सहारा है, जिसे किसी भी कीमत पर खत्म नहीं होने दिया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष शिवलाल कोरी ने की। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी मनरेगा की मजबूती और मजदूरों के अधिकारों की रक्षा के लिए सड़क से संसद तक संघर्ष जारी रखेगी। उक्त अवसर पर प्रमुख रूप से विजय उपाध्याय, शनि, ग्राम प्रधान राजू, नागेंद्र प्रसाद तिवारी, मोहम्मद हनीफ पुजारी, विनोद कुमार मिश्रा, रामउगर यादव, इरशाद अहमद, सावल प्रसाद यादव, कमलेश यादव, प्रभारी कंट्रोल रूम बृजेश चौहान सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता एवं ग्रामीण उपस्थित रहे।

माध्यमिक स्तरीय सामाजिक विज्ञान का तीन दिवसीय प्रशिक्षण डायट पर हुआ संपन्न

दैनिक बुद्ध का संदेश

बांसी/सिद्धार्थनगर। आशासकीय सहायता प्राप्त

माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत सामाजिक विज्ञान विषय के सहायक अध्यापकों का माध्यमिक स्तरीय सैंपल शिक्षण योजना शिक्षक संदर्शिका के प्रतिदिप्त मॉड्यूल कक्षा 9, 10 पर आधारित प्रशिक्षण जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान सिद्धार्थनगर में संपन्न हुआ। प्रशिक्षण के समापन के अवसर पर संस्थान के वरिष्ठ प्रवक्ता लालजी कुमार पांडेय द्वारा बताया गया कि सामाजिक विज्ञान विषय हेतु शिक्षण योजना द्वारा कक्षा शिक्षण कार्य को रुचिकर, आकर्षक तथा प्रभावशाली ढंग से किया जाए।

तीन दिवसीय प्रशिक्षण के आरंभिक सत्र में डायट प्रवक्ता/ प्रशिक्षण प्रभारी मोहम्मद यूनुस ने इस प्रशिक्षण के उद्देश्य, महत्व एवं आवश्यकता पर प्रकाश डाला। प्रशिक्षण में डायट प्रवक्ता महेंद्र कुमार यादव द्वारा संसाधन एवं विश्व के चरवाहे पर अपने सत्र का संचालन किया गया। राजकीय इंटर कॉलेज पंचमोहनी के प्रवक्ता अजय शंकर उपाध्याय द्वारा लोकतंत्र एवं संस्थाओं के कामकाज का सत्र लिया गया है। मास्टर ट्रेनर के रूप में कृष्ण कुमार सोनकर सहायक अध्यापक दीनबंधु इंटर कॉलेज नदाव, शिवाश्रय सहायक अध्यापक तिलक इंटर कॉलेज बांसी, जितेंद्र कुमार सहायक अध्यापक पीपल्स इंटर कॉलेज डुमरियागंज द्वारा अपना योगदान दिया गया। प्रशिक्षण को संपन्न कराने में मंजुला यादव, फुरकान अहमद, धर्मेंद्र कुमार, अनुराग कुमार श्रीवास्तव की महत्वपूर्ण भूमिका रही। प्रशिक्षण में बृजेश कुमार द्विवेदी, सैयद अकबर आलम, पवन कुमार प्रदीप कुमार, बीना श्रीवास्तव आदि उपस्थित रहे।

सामुदायिक सहभागिता आवश्यक

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगरं बच्चों के शत–प्रतिशत नामांकन, उपस्थिति एवं ठहराव के साथ ही बच्चों एवं विद्यालय के चातुर्दिक विकास में विद्यालय प्रबंधन समितियों का सहयोग नितांत आवश्यक है।ध विद्यालय प्रबंधन समिति के समस्त सदस्यों को उनके कर्तव्यों एवं दायित्वों की जानकारी होनी चाहिए। बीआरसी नौगढ़ में आयोजित एसएमसी मास्टर ट्रेनर्स के जनपद स्तरीय प्रशिक्षण में यह विचार बीईओ रामकुमार सिंह ने व्यक्त किए। इस अवसर पर ज़िला समन्वयक सामुदायिक सहभागिता अमित शुक्ला ने कहा कि समस्त ब्लाकों में एसएमसी सदस्यों का एक दिवसीय प्रशिक्षण जल्द ही कराया जाएगा, जिसमें मास्टर ट्रेनर्स एसएमसी के गठन एवं उद्देश्यों के बारे में विस्तृत जानकारी साझा करेंगे। कार्यक्रम में मास्टर ट्रेनर विजयेन्द्र मिश्रा एवं अनुराग वर्मा द्वारा बहुपयोगी बिंदुओं पर चर्चा कराई गई। प्रशिक्षण में नियाज़ अहमद, सत्येन्द्र गुप्ता, आलोक आनंद, मुस्तन शेरुल्लाह, रामराज चौधरी, इफ्तेखारुन्निसा, वंदना आदि प्रशिक्षकों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल जगदेव यादव के पीड़ित परिजनों से किया मुलाकात

दैनिक बुद्ध का संदेश

पयागपुर/बहराइच। विगत दिनों हुए दोहरे हत्याकांड को लेकर आज उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय

के निर्देश पर तथा जिलाध्यक्ष शिवेंद्र प्रताप सिंह के दिशा–निर्देशन में कांग्रेस जनों का एक प्रतिनिधिमंडल स्वर्गीय जगदेव यादव के पीड़ित परिजनों से कटहरी बाग एवं स्वर्गीय ननके यादव के परिजनों से निबिहा गांव जाकर परिजनों से मुलाकात कर उन्हें अब तक न्याय न मिलने पर चिंता जताई तथा हर संभव मदद करने हेतु आश्वासन दिया। इसके साथ ही सम्पूर्ण प्रकरण की विस्तृत जानकारी प्रदेश तथा जिला कार्यालय को दिया गया। प्रतिनिधि मंडल में वरिष्ठ कांग्रेस नेता विनय सिंह, गांधी वादी नेता इन्द्र कुमार यादव, जिला उपाध्यक्ष राम नरेश यादव, सेवादल के अध्यक्ष विष्णु यादव कांग्रेस अल्पसंख्यक विभाग के महासचिव मुस्तफा राजू, सहित कई लोग प्रतिनिधि मंडल में शामिल रहे। इस दौरान कांग्रेस नेता विनय सिंह ने कहा कि पीड़ित परिवार को न्याय दिलाना ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उन्होंने कहा कि यदि एक सप्ताह तक पीड़ित परिवार को न्याय न मिला और दोषियों को गिरफ्तार कर जेल न भेजा गया तो हम कांग्रेस जन सडक से लेकर संसद तक व्यापक रूप से आन्दोलन छेड़ेंगे।जिसकी पूरी जिम्मेदारी शासन और प्रशासन की होगी।

22 जनवरी को शोहरतगढ़ में 40,500 मतदाताओं को जारी होगी नोटिस

दैनिक बुद्ध का संदेश

शोहरतगढ़/सिद्धार्थनगर। निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार मतदाता सूची को शत–प्रतिशत सटीक और पारदर्शी बनाने के लिए एसडीएम शोहरतगढ़ ने शेषशेष गहन पुनरीक्षणश (एसआईआर) अभियान तेज कर दिया है। समस्त विधानसभा शोहरतगढ़ में डेटा विसंगतियों वाले 40,500 मतदाताओं को चिन्हित कर नोटिस जारी करने की प्रक्रिया शुरू की गई है। इस बड़े कार्य को समय पर पूरा करने के लिए प्रशासन ने 12 अतिरिक्त अधिकारियों की विशेष तैनाती की है। यूईएफ डेटारू क्यों भेजे जा रहे हैं 40,500 नोटिस? एसडीएम कार्यालय के मुताबिक जांच के दौरान 40,500 ऐसे मामले (यूईएफ रू यूनिक इन्यूमरेशन फॉर्म) पाये गये हैं, जिनमें कुछ तकनीकी सुधार या भौतिक सत्यापन की जरूरत है। नोटिस भेजने का मुख्य उद्देश्य इन कमियों को दूर करना है' डबल नाम (डीएसई) रू एक ही व्यक्ति का नाम दो जगह होने पर एक को हटाया जायेगा। ' लॉजिकल एरर फोटो और उम्र में मेल न खाना या एक ही पते पर संदिग्ध रूप से ज्यादा वोटर होना। शिफ्टिंग और मृतक रू जो लोग क्षेत्र छोड़ चुके हैं या जिनकी मृत्यु हो चुकी है, उनका नाम सूची से हटाया जायेगा। ' अपूर्ण डेटा : फोटो साफ न होना या आधार लिंक न होने वाले मामलों का सत्यापन होगा। आंकड़ों का विश्लेषण – विधानसभा शोहरतगढ़ के कुल 452 बूथों पर यह अभियान चलेगा। औसत आधार पर देखें तो हर बूथ पर लगभग 90 मतदाताओं का सत्यापन बीएलओ द्वारा किया जायेगा। प्रशासनिक टीम : इन अधिकारियों को मिली जिम्मेदारी कार्य की महत्ता को देखते हुए एसडीएम ने अलग–अलग ब्लॉक और तहसील स्तर पर अधिकारियों की ड्यूटी लगाई है। विकास खण्ड बढ़नी : अरुण कुमार (खण्ड शिक्षा अधिकारी), रविन्द्र कुमार यादव (सीडीपीओ), राणा प्रताप सिंह और उमेश चौधरी। ' विकास खण्ड शोहरतगढ़ : चन्द्र भूषण त्रिपाठी (बीडीओ), संजय कुमार और बब्बू आजाद।

मतदाताओं के लिए जरूरी जानकारी

सुनवाई का समय, प्रतिदिन सुबह 11:00 बजे से शाम 4:00 बजे तक तहसील और सम्बन्धित केन्द्रों पर सुनवाई होगी। जरूरी दस्तावेज : सत्यापन के समय मतदाता को आधार कार्ड, निवास प्रमाण पत्र या आयोग द्वारा मान्य 11 दस्तावेजों में से कोई एक दिखाना होगा।

महत्वपूर्ण फॉर्म

नया नाम जोड़ने के लिए फॉर्म–6, नाम कटवाने के लिए फॉर्म–7 और सुधार के लिए फॉर्म–8 का प्रयोग करें। एसडीएम ने सख्त लहजे में कहा है कि इस प्रक्रिया में किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जायेगी। उन्होंने जनता से अपील की है कि बीएलओ के घर आने पर या नोटिस मिलने पर सहयोग करें ताकि एक स्वच्छ मतदाता सूची तैयार हो सकें।

वार्षिक विज्ञान मेले का भव्य आयोजन, छात्राओं ने प्रदर्शित की वैज्ञानिक प्रतिभा

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। जनपद सिद्धार्थनगर के सिल्वर स्पून रेस्टोरेंट में मंगलवार को वार्षिक विज्ञान मेले का भव्य आयोजन किया गया। यह आयोजन जिला बेसिक शिक्षा विभाग, कॉपर सर्जिकल एवं स्माइल फाउण्डेशन के संयुक्त सहयोग से सम्पन्न हुआ। विज्ञान मेले में छात्राओं द्वारा विज्ञान, तकनीक, अभियांत्रिकी एवं गणित (ज्म्ड) पर आधारित विभिन्न नवाचारी प्रोजेक्ट प्रस्तुत किये गये। छात्राओं ने पर्यावरण संरक्षण, नवीकरणीय ऊर्जा, जल संरक्षण, स्वच्छता, डिजिटल नवाचार एवं सामाजिक समस्याओं के समाधान से सम्बन्धित अनेक मॉडल प्रदर्शित किये, जिन्हें उपस्थित अतिथियों द्वारा सराहा गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुरेन्द्र श्रीवास्तव, जिला समन्वयक (बालिका शिक्षा) ने में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, रचनात्मक सोच एवं नवाचार की भावना विकसित होती है। उन्होंने छात्राओं को निरन्तर सीखने, प्रयोग करने एवं अनुसंधान के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के समापन अवसर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली छात्राओं को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में अपूर्व श्रीवास्तव (स्टेट रिसोर्स पर्सन), कार्यक्रम को जज सुश्री कल्पना, नीतीश कुमार लेखाकार एवं स्माइल फाउंडेशन की टीम उपस्थित रही। आज के कार्यक्रम में स्पेशल पुरस्कार कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, नौगढ़, प्रथम पुरस्कार कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, मिठवल, दूसरा पुरस्कार कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, बांसी एवं तीसरा पुरस्कार कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय बांसी को दिया गया।

अपने सम्बोधन में कहा कि इस प्रकार के आयोजनों से छात्राओं

सिद्धार्थनगर महोत्सव में दिखेगा स्कूली छात्रों का जलवा, ऑडिशन हुआ सम्पन्न

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। रघुवर प्रसाद जयसवाल सरस्वती विद्या मंदिर तेतरी बाजार सिद्धार्थनगर में "सिद्धार्थनगर महोत्सव" में मंच प्रस्तुति हेतु स्कूली छात्रों के ऑडिशन में सम्मिलित विद्यालय गंगा नेशनल, जय किसान, लिटिल फ्लावर, प्राथमिक विद्यालय करौंदा मंदिर, सिद्धार्थ पब्लिक स्कूल करौदा मसिना, ठाकुर वेणी माधव चिल्ड्रन एजुकेशन, बरसाती यादव इन्टर कालेज, मुस्लिम इन्टर कॉलेज महदेइया आदि 58 विद्यालयों ने प्रतिभाग किया।

जिला विद्यालय निरीक्षक की देखरेख में आयोजन समिति के सदस्य सविता वर्मा, ज्योत्सना सिंह, अर्चना सिंह, सच्चिदानन्द शुक्ला, पूर्णेश्वर मिश्रा, समर बहादुर, राजेश शर्मा, अनिल कुमार व उमाशंकर ने छात्रों का ऑडिशन लिया गया। कार्यक्रम का संचालन नितेश पाण्डेय ने किया।

दंगल में दंगई बोल, राघवेन्द्र प्रताप सिंह का विवादित बयान हुआ वायरल, पहलवानों को लेकर कही थी आपत्तिजनक बात

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। जनपद सिद्धार्थनगर में स्थित डुमरियागंज के पूर्व विधायक और हियुवा नेता राघवेन्द्र प्रताप सिंह एक बार फिर अपने तीखे और विवादित तेवरों के कारण सुर्खियों में हैं। राप्ती नदी के तट पर स्थित परशुराम वाटिका में आयोजित राम–राम कुश्ती दंगल के दौरान मंच से दिया गया उनका एक बयान सोशल मीडिया पर आग की तरह फैल गया है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक धर्म रक्षा मंच के बैनर तले आयोजित इस दो दिवसीय कुश्ती प्रतियोगिता के दूसरे दिन माहौल तब तनावपूर्ण हो गया जब एक शास्त्री और एक थापा पहलवान के बीच मुकाबले के दौरान बेईमानी के आरोप लगने लगे। देखते ही देखते अखाड़े में अन्य पहलवान भी कूद पड़े और मारपीट शुरू हो गई। हंगामा इतना बढ़ा कि कुछ पहलवान सीधे मंच पर चढ़ गये। हंगामा बढ़ता देख आयोजन के संरक्षक और पूर्व विधायक राघवेन्द्र प्रताप सिंह ने माइक संभाला। शुरुआत में उन्होंने पहलवानों को समझाने और मंच से नीचे उतरने को कहा, लेकिन जब स्थिति काबू में नहीं आई तो उन्होंने अपना आपा खो दिया। वायरल वीडियो में उन्हें यह कहते सुना जा सकता है– ष्शास्त्री पहलवान को ऊपर बुलाओष और फिर सवाल किया–ष्कौन मुसलमान है?ष इसके तुरन्त बाद उन्होंने पहलवानों का ष्खतना चेकष कराने जैसी अत्यन्त आपत्तिजनक टिप्पणी की। वीडियो में पूर्व विधायक थाना

प्रभारी डुमरियागंज श्रीप्रकाश यादव और अपने प्रतिनिधि लवकुश ओझा को माइक से तीन बार यह निर्देश देते दिख रहे हैं कि पहलवानों की जांच की जायें। इस बयान के बाद वहां मौजूद दर्शकों में भारी असहजता और नाराजगी देखी गई। वीडियो वायरल होते ही फेसबुक, एक्स (ट्विटर) और व्हाट्सएप ग्रुपों में तीखी प्रतिक्रियाएं आ रही हैं। सोशल मीडिया यूजर्स का कहना है कि सार्वजनिक मंच से ऐसी भाषा का प्रयोग सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने वाला है। एक विशेष समुदाय को लक्षित कर दिया गया। यह बयान नफरत फैलाने की कोशिश है। प्रशासन को इस पर तत्काल संज्ञान लेकर कठोर कार्रवाई करनी चाहिए। राघवेन्द्र प्रताप सिंह का विवादों से पुराना नाता है। यह पहली बार नहीं है जब राघवेन्द्र प्रताप सिंह अपने बयानों को लेकर घेरे में आयें। इससे पहले भी वह हिन्दू–मुस्लिम ध्रुवीकरण और विवादित टिप्पणियों के कारण कई बार चर्चा में रह चुके हैं। उनकी कार्यशैली हमेशा से ही आक्रामक हिन्दुत्व की राजनीति के इर्द–गिर्द रही है, जिससे उनके समर्थकों और विरोधियों के बीच अक्सर वैचारिक टकराव देखने को मिलता है। फिलहाल, इस मामले में स्थानीय पुलिस या प्रशासन की ओर से किसी आधिकारिक कार्रवाई की पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन राजनीतिक गलियारों में इस बयान को लेकर चर्चाएं तेज हो गई हैं।

गैस सिलेंडर से लगी आग में 60 वर्षीय व्यक्ति झुलसा, जिला अस्पताल में भर्ती

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। जिले के को देखते हुए उसे जिला पहुंचाया। पूरे मार्ग में जोगिया क्षेत्र अंतर्गत जोगी बारी निवासी लगभग 60 वर्षीय एक पुरुष गैस सिलेंडर से लगी आग की चपेट में आकर गंभीर रूप से झुलस गया। घटना के तुरंत बाद परिजनों द्वारा आपातकालीन सेवा 108 पर सूचना दी

गई, जिसके बाद एंबुलेंस समय से मौके पर पहुंची। 108 एंबुलेंस की सहायता से घायल व्यक्ति को सुरक्षित रूप से सीएससी जोगिया लाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने उसकी स्थिति अस्पताल सिद्धार्थनगर के लिए रेफर कर दिया। एम्बुलेंस में तैनात ईएमटी पारसनाथ एवं पायलट विकास ने सूझबूझ और सतर्कता के साथ मरीज की देखभाल करते हुए उसे सुरक्षित जिला अस्पताल चिकित्सक डॉ. रस्तोगी की निगरानी में मरीज को आवश्यक उपचार दिया जाता रहा। फिलहाल घायल व्यक्ति का इलाज जिला अस्पताल में जारी है और उसकी स्थिति स्थिर बताई जा रही है।

मौजूदा सदी के जन नायक लोहियावादी राजनीति का मजबूत स्तंभ माता प्रसाद पाण्डेय

दैनिक बुद्ध का संदेश

इटवा/सिद्धार्थनगर प्रदेश की राजनीति में जब सिद्धांतों की जगह समीकरण और विचारधारा की जगह सुविधा ने ले ली है।ऐसे दौर में माता प्रसाद पाण्डेय एक ऐसे नेता के रूप में सामने आते हैं।जिनकी तुलना मौजूदा सदी में किसी से करना कठिन ही नही।बल्कि असंभव प्रतीत होता है। वे सिर्फ एक वरिष्ठ नेता नही बल्कि जनता के दुख–दर्द के सच्चे साथी और लोहियावादी राजनीति की जीवंत मिसाल हैं। लोहिया के विचार, संघर्ष की राजनीति डॉ.राममनोहर लोहिया की समाजवादी विचारधाराकृसमानता, सामाजिक न्याय और शोषण के खिलाफ संघर्षकृमाता प्रसाद पाण्डेय के राजनीतिक जीवन की मूल आत्मा रही है। उन्होंने समाजवाद को भाषणों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि जमीन पर उतरकर जनता के बीच जिया। किसान, मजदूर, गरीब और वंचित तबकों के मुद्दों को उन्होंने हमेशा प्राथमिकता दी। ब्राह्मण होकर भी सर्वसमाज के नेता माता प्रसाद पाण्डेय की राजनीति की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि उन्होंने जाति आधारित राजनीति से खुद को अलग रखा। ब्राह्मण समाज से होने के बावजूद उन्होंने कभी

ब्राह्मणवाद को राजनीति का आधार नहीं बनाया। यही कारण है कि वे हर वर्ग में सम्मान के साथ स्वीकार किए जाते है। पिछड़े, दलित और अल्पसंख्यक समाज के बीच भरोसेमंद नेता माने जाते है। सर्वसमाज की आवाज़ के रूप में पहचाने जाते है। सभी दलों में अलग पहचान प्रदेश की राजनीति में यह दुर्लभ है कि किसी नेता को लगभग सभी राजनीतिक दलों में सम्मान की दृष्टि से देखा जाए। माता प्रसाद पाण्डेय ने अपने स्पष्ट विचार, ईमानदार छवि और निडर व्यक्तित्व के कारण यह स्थान हासिल किया। सत्ता पक्ष हो या विपक्षकृ उनकी बातों को गंभीरता से सुना जाता है। एसी कमरों की नहीं, ज़मीन की राजनीति माता प्रसाद पाण्डेय की पहचान जनआंदोलनों से रही है। वे हमेशाकृ गांव की चौपालों पीड़ितों के घर धरना–प्रदर्शनों किसानों और नौजवानों के बीच खड़े नजर आए। सत्ता में हों या न हों, जनता की समस्याओं पर उनकी आवाज़ कभी कमजोर नहीं पड़ी। इस सदी में बेमिसाल आज के समय में जब राजनीति प्रचार, पोस्टर और सोशल मीडिया तक सिमटती जा रही है।माता प्रसाद पाण्डेय संघर्ष, विचार और आचरण से पहचाने जाते हैं। यही वजह है कि मौजूदा सदी में उनकी तुलना किसी अन्य नेता से नहीं की जा सकती। निष्कर्ष माता प्रसाद पाण्डेय उस राजनीति के प्रतीक है। जहां सत्ता नहीं, सेवा केंद्र में होती है। वे आने वाली पीढ़ियों के लिए यह संदेश छोड़ते हैं कि सिद्धांतों पर चलकर भी राजनीति में लंबी और सम्मानजनक पहचान बनाई जा सकती है। निस्संदेह, माता प्रसाद पाण्डेय मौजूदा सदी के जन नायक और लोहियावाद के सशक्त प्रतीक हैं।

108 एंबुलेंस में में दिया महिला ने बच्चे को जन्म

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। जिला सिद्धार्थनगर के लोटन ब्लॉक में 108 एंबुलेंस सेवा के तहत एक सराहनीय मामला सामने आया है। एंबुलेंस संख्या यूपी32ईजी4601 में तैनाद ईएमटी, पॉयलेट की शुझ बूझ से एक गर्भवती महिला ने एक नवजात शिशु को जन्म दिया। प्रसूता को अस्पताल लाने गई थी एंबुलेंस पीटता को अपने एंबुलेंस में शिफ्ट किया और हॉस्पिटल के लिए निकले

अचानक प्रसव पीड़ा तेज होने लगी । मौके पर मौजूद एमटी प्रदीप कुमार और पायलट कृष्ण कुमार शुक्ला की सूझबूझ व तत्परता से एंबुलेंस में ही सुरक्षित प्रसव कराया गया। प्रसव के बाद जच्चा और नवजात दोनों को सुरक्षित स्थिति में नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र सीएचसी लोटन में भर्ती कराया गया। बताया जा रहा है कि मां और बच्चा दोनों स्वस्थ हैं। 108 एंबुलेंस सेवा के कर्मचारियों की त्वरित कार्रवाई से एक बड़ी अनहोनी टल गई, जिसकी स्थानीय स्तर पर सराहना की जा रही है।

बांसी ब्लाक क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत पटखौली बना अन्नपूर्णा भवन के बाद अब आरसीसी रोड में खेल, जांच सिर्फ कागजों तक सीमित

दैनिक बुद्ध का संदेश

बांसी। विकास खण्ड बांसी अंतर्गत ग्राम पंचायत पटखौली अदिलापुर एक बार फिर

भ्रष्टाचार के आरोपों के केंद्र में है। अन्नपूर्णा भवन के घटिया निर्माण का मामला अभी ठंडा भी नहीं पड़ा था कि अब लाखों रुपये की लागत से बनी आरसीसी रोड में भारी अनियमितता सामने आ गई है। मंदिर से लेकर बहाऊ के घर तक बनाई गई सीसी रोड घटिया ढलाई का शिकार होकर कुछ ही समय में उखड़ने लगी है, जिससे सरकारी धन के खुले दुरुपयोग की तस्वीर साफ हो गई है। स्थानीय ग्रामीणों का आरोप है कि सड़क निर्माण के दौरान तकनीकी मानकों की खुलेआम अनदेखी की गई। ढलाई से पहले पन्नी बिछाकर, कम सीमेंट और अधिक बालू का प्रयोग किया गया, जिसके कारण सड़क बनते ही जगह–जगह से गिट्टियां बाहर आने लगीं। सड़क की यह स्थिति निर्माण कार्य की गुणवत्ता पर ही नहीं, बल्कि जिम्मेदारों की कार्यशैली पर भी गंभीर सवाल खड़े करती है। सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि इतने स्पष्ट तकनीकी दोषों के बावजूद न तो किसी अधिकारी ने मौके पर निरीक्षण करना जरूरी समझा और न ही निर्माण एजेंसी के खिलाफ कोई कार्रवाई हुई। ग्राम सचिव, ग्राम प्रधान और तकनीकी सहायक (टीए) की चुप्पी ने पूरे मामले को और भी संदेहास्पद बना दिया है, जिससे जिम्मेदारों की मिलीभगत की आशंका गहराने लगी है। गौरतलब है कि इसी ग्राम पंचायत में हाल ही में अन्नपूर्णा भवन के घटिया निर्माण को लेकर उच्च अधिकारियों द्वारा जांच कराई गई थी, लेकिन जांच के बावजूद न तो दोषियों पर सख्त कार्रवाई हुई और न ही किसी प्रकार का ठोस सुधार देखने को मिला। अब उसी पंचायत में आरसीसी रोड में भी अनियमितता सामने आना, कमाऊ–खाऊ नीति के लगातार जारी रहने की ओर इशार।

युवक की बेरहमी से पिटाई का वीडियो हुआ वायरल

दैनिक बुद्ध का संदेश

बांसी/सिद्धार्थनगर। कोतवाली बांसी क्षेत्र के आजाद चौक के पास सोमवार रात्रि मामूली विवाद को लेकर एक युवक की बेरहमी से पिटाई की गई। इस घटना का वीडियो वायरल होने के बाद मामला गरमा गया है। पुलिस ने एक आरोपी को हिरासत में लिया है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक, पठनपूरवा गांव निवासी टेम्पो चालक अफजल पुत्र कुर्बान सोमवार रात बांसी से अपने घर लौट रहा था। आजाद चौक के पास रामगढ़ के कुछ युवकों से उसकी किसी बात को लेकर कहा–सुनी हो गई। देखते ही देखते कई युवकों ने अफजल को घेर लिया और घूंसे–मुक्कों से उसकी

सामने आये वीडियो में साफ देखा जा सकता है कि कई लोग मिलकर एक युवक को पीट रहे हैं। इस हमले में अफजल को चोटें आई, जिसके बाद उसे इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बांसी ले जाया गया। वहां उसका उपचार जारी है। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए मारपीट करने वाले एक युवक को हिरासत में ले लिया है। वीडियो के आधार पर अन्य आरोपियों की पहचान की जा रही है। इस सम्बन्ध में क्षेत्राधिकारी बांसी ने बताया कि मामले को संज्ञान में लिया गया है और जांच जारी है। पीड़ित का मेडिकल परीक्षण कराया गया है। दोषियों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जायेगी। पुलिस क्षेत्र में शान्ति व्यवस्था बनाये रखने के लिए निगरानी कर रही है।

भाजपा भविष्य में मनरेगा योजना को समाप्त करने की रच रही है साजिश – काजी सुहेल अहमद

दैनिक बुद्ध का संदेश

डुमरियागंज/सिद्धार्थनगर। कांग्रेस पार्टी द्वारा चलाए जा रहे मनरेगा बचाओ संग्राम अभियान के तहत मंगलवार को डुमरियागंज ब्लाक के ग्राम पंचायत गौराही में ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष मुकेश चौबे द्वारा चौपाल आयोजित की गई। चौपाल में उपस्थित लोगों को सम्बोधित करते हुए जिला कांग्रेस अध्यक्ष काजी सुहेल अहमद ने कहा कि मनरेगा करोड़ों ग्रामीण गरीबों की आजीविका का आधार है। भाजपा सरकार योजनाबद्ध तरीके से इस योजना को कमजोर कर रही है और भविष्य में मनरेगा योजना को समाप्त करने की साजिश रच रही है, जिसे कांग्रेस पार्टी किसी भी हाल में स्वीकार नहीं करेगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी मनरेगा के मूल स्वरूप, काम की गारन्टी और मजदूरी के अधिकार की रक्षा के लिए सड़क से संसद तक संघर्ष करती रहेगी। मनरेगा बचाओ संग्राम के जिला कोऑर्डिनेटर राजन श्रीवास्तव ने कहा कि मनरेगा सिर्फ एक योजना नहीं बल्कि ग्रामीण भारत की जीवनरेखा है। सरकार द्वारा बजट में कटौती, भुगतान में देरी और नाम बदलने जैसे कदम मनरेगा को समाप्त करने की साजिश का हिस्सा हैं। उन्होंने श्रमिकों से एकजुट होकर अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ने का आह्वान किया। चौपाल कार्यक्रमों में युवा कांग्रेस प्रदेश महासचिव अश्विनी सिंह सोलंकी, जिला कोषाध्यक्ष रियाज मनिहार, ब्लाक अध्यक्ष मुकेश चौबे, राधे कुंवर श्रीवास्तव, राजेन्द्र गौतम, गुड्डू साहनी, अजय कुमार चौबे, निसार अहमद, राकेश श्रीवास्तव, तुलसी साहनी सहित बड़ी संख्या में मनरेगा श्रमिक एव क्षेत्रीय लोग उपस्थित थे।

डुमरियागंज की शबाना ने मुम्बई बीएमसी चुनाव जीता, वासा गांव की बेटी बनी नगर सेवक

दैनिक बुद्ध का संदेश

डुमरियागंज/सिद्धार्थनगर। डुमरियागंज तहसील के वासा गांव की शबाना फारूक काजी ने मुम्बई महानगरपालिका

(बीएमसी) चुनाव में जीत हासिल की है। वह वार्ड नम्बर 143, चीता कैम्प क्षेत्र से नगर सेवक चुनी गई हैं। शबाना फारूक काजी ने ऑल इंडिया मजलिस–ए–इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) के टिकट पर चुनाव लड़ा था। उन्हें कुल 5264 मत प्राप्त हुए। उनके निकटतम प्रतिद्वंद्वी शिवसेना की शोभा दिनकर जयभाये को 4321 वोट मिले। शबाना ने 947 मतों के अन्तर से जीत दर्ज की। शबाना फारूक काजी वासा गांव के मूल निवासी फारूक काजी की बेटी हैं। यह उनका पहला बीएमसी चुनाव था जिसमें उन्होंने राजनीतिक रूप से हिस्सा लिया। शबाना की इस सफलता पर उनके परिवार के सदस्यों और गांव के लोगों में खुशी का माहौल है। वासा गांव निवासी शारिक काजी ने बताया कि इस उपलब्धि से पूरा गांव उत्साहित है। गांव के ही निवासी और कांग्रेस पार्टी के जिलाध्यक्ष काजी सुहेल अहमद ने कहा कि शबाना फारूक काजी ने मुम्बई के इस महत्वपूर्ण चुनाव में जीत हासिल कर पूरे वासा गांव को गौरवान्वित किया है। उन्होंने इसे राजनीतिक रूप से एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया।

सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र में समीक्षा बैठक हुई सम्पन्न

दैनिक बुद्ध का संदेश

इटवा/सिद्धार्थनगर। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र इटवा के अधीक्षक डॉ0 संदीप कुमार द्विवेदी की अध्यक्षता में सोमवार को एक महत्वपूर्ण साप्ताहिक समीक्षा बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में विकास खण्ड के सभी सीएचओ, एएनएम और सुपरवाइजर ने प्रतिभाग किया। बैठक का मुख्य एजेण्डा आयुष्मान भारत योजना के तहत शत–प्रतिशत लक्ष्य हासिल करना रहा। अधीक्षक डॉ0 संदीप कुमार द्विवेदी ने विकास खण्ड के अन्तर्गत आने वाले उन सभी ग्रामों और पुरवों की समीक्षा की, जहां अभी भी पात्र लाभार्थी आयुष्मान कार्ड से वंचित हैं। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिया कि प्रत्येक उपकेन्द्र को

प्रतिदिन 20 आयुष्मान गोल्डन कार्ड बनाने अनिवार्य हैं। इस कार्य में किसी भी प्रकार की शिथिलता बर्दाश्त नहीं की जायेगी। बैठक के दौरान अधीक्षक ने विशेष रूप से निर्देशित किया कि 70 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों, पात्र गृहस्थी और अन्त्योदय कार्ड धारकों को खोजकर उनके कार्ड प्राथमिकता के आधार पर बनाये जायें। उन्होंने कहा कि सरकार की इस जनहितैषी योजना का लाभ हर पात्र व्यक्ति तक पहुंचाना स्वास्थ्य विभाग की प्राथमिकता है। वहीं समीक्षा बैठक के दौरान मुख्य रूप से ब्लॉक प्रोग्राम मैनेजर (बीपीएम) अनिल कुमार यादव, एआरओ ओम प्रकाश त्रिपाठी, बीसीपीएम शिवशंकर वरुण और डीईओ दिनेश कुमार श्रीवास्तव मौजूद रहे। फील्ड स्टाफ में मंजू सिंह, सुशीला देवी, रीना तिवारी, सुभावती देवी, रजनी पाल, प्रियंका वर्मा, रूमा चौधरी, नीलम वर्मा, आरती चौधरी, अन्तिमा रानी (सभी एएनएम) तथा सीएचओ सीमा यादव, रंजना यादव, पिंकी चौहान, अंबिका मौर्य और बृज किशोर दुबे सहित अन्य स्वास्थ्यकर्मी उपस्थित रहे।

डम्पर वाहन की ठोकर से तीन विद्युत पोल टूटे, विद्युत आपूर्ति रही बाधित

दैनिक बुद्ध का संदेश

पकड़ी बाजार/सिद्धार्थनगर। राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएच) 730 पर ओवरब्रिज निर्माण के लिए मिट्टी ले जा रही डम्पर वाहन अनियन्त्रित होकर तीन विद्युत पोलों से टकरा गई। इस हादसे के कारण पकड़ी फीडर से जुड़े अगया, चौहट्टा, खरगवार, छतहरी समेत कई

गांवों की विद्युत आपूर्ति पूरी रात ठप रही। सोमवार की दोपहर विद्युत विभाग के कर्मचारियों ने काफी मेहनत के बाद नया पोल लगाकर आपूर्ति बहाल की।शोहरतगढ़–चेतिया मार्ग पर राष्ट्रीय राजमार्ग बाईपास निर्माण में मिट्टी भरकर ले जा रही डम्पर वाहन की टक्कर से तीन पोल टूट गये और तार क्षतिग्रस्त हो गया।

सम्पादकी

निर्विवाद रूप से भारत के जहां इस्राइल से बेहतर संबंध हैं, वहीं विश्वसनीयता अरब देशों में भी बरकरार रही है। गाजा में शांति प्रयासों में लगे अरब देशों के साथ भारत के मधुर संबंध रहे हैं। लेकिन यदि शांति प्रयासों में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका को नजरअंदाज किया जाता है तो यह भारत की कूटनीतिक पहल के अनुकूल नहीं होगा। निस्संदेह, भारत हमेशा से ही प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के बजाय स्थिरता को बढ़ावा देने ...

गाजा पर ट्रम्प प्रस्ताव यूएन को करेगा कमजोर

नोबेल शांति पुरस्कार की उत्कट अभिलाषा के मोह में अमेरिकी राष्ट्रपति दुनिया के तमाम हिस्सों में जारी अशांति पर शांति थोपने की असफल कोशिश करते रहे हैं। कई देशों में टकराव के बाद शांति की स्थापना की असफल कोशिशों के पश्चात अब ट्रंप गाजा में शांति थोपने का उपक्रम कर रहे हैं। गाजा में शांति स्थापना के लिये अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की प्रस्तावित योजना विश्व की नियामक संस्थाओं के ढांचे से बाहर उनकी प्राथमिकताओं के अनुरूप एक महत्वाकांक्षी कदम है। गाजा में शांति बनाये रखने के लिये मुनाफे व व्यापार जैसी प्रक्रिया के रूप में यह प्रयास अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं, विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र की प्रासंगिकता को एक प्रत्यक्ष चुनौती है। जो लंबे समय से दुनिया के सबसे जटिल संघर्षों में से एक गाजा संकट को दूर करने के प्रयासों में लगी हुई हैं। सही मायनों में ट्रंप का यह शांति प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र संघ को दरकिनार करने जैसा है, जिसको लेकर उन्होंने बार–बार नकारात्मक प्रतिक्रिया दी हैं। उनकी दलील है कि संयुक्त राष्ट्र संघ मौजूदा वैश्विक चुनौतियों से निपटने में अक्षम और पक्षपाती है। वह इसमें अत्यधिक नौकरशाही हावी होने के भी आरोप लगाते रहे हैं। निश्चित तौर पर दुनिया की महाशक्तियां संयुक्त राष्ट्र को हांकने का प्रयास करती रही हैं। वे अपने मनमाफिक न होने पर इसे अक्षम बताने लगते हैं। दरअसल, ट्रंप की कोशिश है कि उसकी मनमाफिक क्षेत्रीय शक्तियां और अमेरिका–संगठित पक्षों द्वारा शांति योजना को सिरे चढ़ाया जाए। निश्चित रूप से यह प्रयास सार्वभौमिक बहुपक्षवाद को नकार कर शासन व्यवस्था बदलने का प्रयास ही है। निर्विवाद रूप से जो शांति, बिना वैधता,सहमति और जवाबदेही के थोपी जाती है, वह कभी स्थायी समाधान का वाहक नहीं बन सकती है। ऐसे में किसी भी विश्वसनीय शांति प्रयास के जरिये उन वास्तविकताओं से निपटना होगा, जिन्हें ट्रंप मनमानी व जल्दबाजी में अकसर नजरअंदाज करते रहे हैं। अन्यथा यह कोशिश भी ट्रंप की अन्य कोशिशों की तरह विफल ही साबित होगी। आज गाजा संकट जिस मुश्किल दौर में पहुंच चुका है, उसके लिये जरूरी है कि अंतर्राष्ट्रीय कानून के क्रियान्वयन, नागरिकों की सुरक्षा और समावेशी शासन का मार्ग प्रभावी समझौते से सुनिश्चित किया जाए। ऐसे हालात में यदि अमेरिका अपनी आर्थिक प्राथमिकताओं को अधिक महत्व देता है या राजनीतिक अधिकारों के बजाय आर्थिक वादों को प्राथमिकता देता है, तो इस प्रयास में उस जोखिम की आशंका बनी रह सकती है, जो जमीनी वास्तविकताओं के बोझ से ढह सकता है। गाजा में शांति के लिये नये प्रयास कसौटी पर तभी खरे उतर सकते हैं जब इसमें गाजा की वास्तविक आवाज को सुना जाता हो। निश्चित रूप से हिंसा पर काबू पाना प्राथमिकता होनी चाहिए, लेकिन नागरिकों के जीवन की गरिमा बनाये रखना और सुरक्षा सुनिश्चित करना भी जरूरी है। शांति समझौते में यदि स्थानीय लोगों के हितों की अनदेखी होती है तो यह शांति प्रस्ताव एक उपलब्धि के रूप में नहीं, बल्कि दशकों से हिंसा व विस्थापन का दंश झेल रहे गाजावासियों के कष्टों को और बढ़ाएगा ही। भारत को इस शांति प्रयासों में शामिल करने का प्रस्ताव अमेरिका की ओर से दिया गया है। भारत वहां सदा से ही द्विराष्ट्र के सिद्धांत का समर्थन करता आया है। निर्विवाद रूप से भारत के जहां इस्राइल से बेहतर संबंध हैं, वहीं विश्वसनीयता अरब देशों में भी बरकरार रही है। गाजा में शांति प्रयासों में लगे अरब देशों के साथ भारत के मधुर संबंध रहे हैं। लेकिन यदि शांति प्रयासों में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका को नजरअंदाज किया जाता है तो यह भारत की कूटनीतिक पहल के अनुकूल नहीं होगा। निस्संदेह, भारत हमेशा से ही प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के बजाय स्थिरता को बढ़ावा देने के लिये बहुपक्षीय मंचों पर ही भरोसा करता रहा है। ऐसे में गाजा में शांति के लिये पहल वैश्विक राजनीति में ट्रंप–प्रेरित उथल–पुथल को ही दर्शाती है। यदि गाजा में सामान्य स्थिति बहाल करने के प्रयास संयुक्त राष्ट्र को नजरअंदाज करते हैं, तो यह उस अंतर्राष्ट्रीय ढांचे को कमजोर करने का जोखिम बढ़ाएगा, जिसकी जरूरत समझौते के पूरा होने के बाद शांति बनाये रखने के लिये है।

श्रीरामचरित मानस ने बड़ी संख्या में धर्मांतरण को रोका

आप मुझसे पूछेंगे कि विश्व में किसी ऐसी पुस्तक का नाम बताइए जिसने धर्मांतरण को रोका हो। मेरा उत्तर श्रीरामचरित मानस होगा। श्रीरामचरित मानस जैसे साहित्यिक ग्रन्थ का प्रणयन विश्व साहित्य में अद्भुत है। मानस के रचनाकार

गोस्वामी गोस्वामी तुलसीदास जी, भगवान श्रीहनुमान जी के कलयुगी अवतार हैं। यदि आप यह सोचते हैं कि मानस के रचनाकार कोई व्यक्ति हैं तो भी आप गलत हैं। मानस के रचनाकार गोस्वामी तुलसीदास जी हैं। प्रभु श्रीराम की ऐतिहासिकता का प्रामाणिक दस्तावेज श्रीरामचरित मानस हैं। सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर सन 1550 ईस्वी तक राम के विविध रूपों को अंतर्मन की चेतना में रचा बसाकर प्रभु श्रीराम के सगुण साकार रूप का मनुष्य जाति को साक्षात्कार कराया। गोस्वामी तुलसीदास के सगुण साकार ब्रह्म का मध्यकालीन भारत की समूची हिन्दू जाति ने दर्शन किया। तुलसी के राम ने तत्कालीन भारतीय सनातनी जाति को विदेशी जातियों से प्रतिरोध का मार्ग सुझाया। इसे आप कह सकते हैं कि पराजित हिंदू जाति के मन में साहस का मार्ग सुझाकर बाबर, हुमायूं, शेरशाह सूरी और अकबर के समय में चल रहे हिंदू दमनात्मक कार्यवाही के विरुद्ध हिंदुओं में प्रतिरोध की संस्कृति को पुष्पित और पल्लवित किया। यदि गोस्वामी जी का श्रीरामचरित मानस न होता तो बड़ी संख्या में धर्मांतरण होता। गोस्वामी जी ऐसे ही विरले रचनाकार हैं जो तत्कालीन मुस्लिम शासकों का विरोध करते हैं। उन्हें अयोध्या में श्रीराम मंदिर तोड़े जाने का अफसोस था तभी तो वे लिखते हैं मांग के खाइबो मसीत में सोइबो (मांग कर खाऊंगा, मस्जिद में सोऊंगा) । ध्यातव्य है कि गोस्वामी जी के लिए वह मंदिर ही था। मध्यकालीन भारत की इस्लामी सत्ता ने तलवार के बल पर बड़ी संख्या में हिंदुओं का रक्तपात किया। वर्तमान में रह रहे हिंदुओं को यह विश्वास नहीं होगा कि उनके पूर्वजों ने हिंदू बने रहने के लिए कितनी यंत्रणाएं झेली थीं। वे सप्ताह भर बिना खाना पानी के रहते थे। वे हिंदू बने रहने के लिए जजिया कर चुकाते थे।

लेखक विनय कांत मिश्र/दैनिक बुद्ध का संदेश

एक गौरवशाली विरासत से खिलवाड़ की कोशिश

तत्कालीन केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने सांसदों से कहा कि दयाल सिंह इवनिंग कॉलेज का नाम बदलने का फैसला केंद्र सरकार का फैसला नहीं था। उन्होंने गवर्निंग बॉडी के फैसले पर रोक लगाने की घोषणा की। वहीं दूसरी ओर, दयाल सिंह इवनिंग कॉलेज स्टाफ एसोसिएशन ने कुलपति के प्रस्ताव का सर्वसम्मति से विरोध करते हुए प्रस्ताव पारित किया...

महान स्वतंत्रता सेनानी, समाजसेवी, दूरदृष्टा, राष्ट्रवादी नेता सरदार दयाल सिंह मजीठिया द्वारा शिक्षा प्रसार के लिए दिए योगदान को कृतज्ञ राष्ट्र भुला नहीं सकता। उनके सपनों को साकार करने हेतु दिल्ली में स्थापित दयाल सिंह इवनिंग कॉलेज का नाम बदलने की अप्रिय कोशिश फिर हुई है। 'वीर बाल दिवस' के मौके पर, दिल्ली यूनिवर्सिटी के वाइस–चांसलर ने एक बार फिर दयाल सिंह इवनिंग कॉलेज का नाम बदलने का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा, हम कॉलेज का नाम बंदा सिंह बहादुर के नाम पर रखना चाहते हैं। दलील दी गई कि दयाल सिंह नाम के मॉर्निंग व इवनिंग कॉलेज होने से छात्रों को भ्रम होता है। दयाल सिंह कॉलेज का एकेडमिक सेशन 1959 में शुरू हुआ और यह कन्फ्यूजन 67 साल बाद, 2026 में पैदा हुआ। कथित भ्रम के बावजूद शैक्षणिक सत्र 2025–2026 में मॉर्निंग और इवनिंग कॉलेजों में 9300 से अधिक छात्र पढ़ रहे हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, विद्वान और प्रतिभाशाली शिक्षकों के कारण कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के 10 शीर्ष कॉलेजों में आता है। सरदार दयाल सिंह मजीठिया (1848–1898), पंजाब के मजीठा गांव के एक महान सपूत थे, जो एक महान परोपकारी, राष्ट्रीय नायक और समानता, स्वतंत्रता, भाईचारा, उदारवाद और मानवता के प्रेमी थे। समाज में अज्ञानता के अंधकार को दूर करने के लिए, दयाल सिंह मजीठिया ने तीन ट्रस्टों की स्थापना की– द ट्रिब्यून ट्रस्ट,

कॉलेज ट्रस्ट और लाइब्रेरी ट्रस्ट। उनके अथक प्रयासों के कारण, पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर की स्थापना 1882 में हुई। दयाल सिंह मजीठिया 'द ट्रिब्यून' (2 फरवरी, 1881) और 'पंजाब नेशनल बैंक' (मई 1894) के संस्थापक भी थे। दयाल सिंह कॉलेज, लाहौर की स्थापना 1910 में दयाल सिंह कॉलेज ट्रस्ट सोसायटी द्वारा, मजीठिया जी की वसीयत के अनुच्छेद 8 में दिए गए निर्देशों के अनुसार की गई थी। विभाजन के कारण दयाल सिंह कॉलेज ट्रस्ट सोसायटी की अधिकांश संपत्ति लाहौर में ही रह गई। ट्रस्ट ने ईमानदारी से दयाल सिंह की विरासत और विचारधारा को आगे बढ़ाया। दयाल सिंह कॉलेज, करनाल (9 सितंबर, 1949), दयाल सिंह पब्लिक लाइब्रेरी, दिल्ली (1954–55), और दयाल सिंह इवनिंग कॉलेज, दिल्ली (1958) की स्थापना की। पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़ के संस्थापक वाइस–चांसलर दीवान आनंद कुमार ने इन एजुकेशनल संस्थानों को स्थापित करने में अहम भूमिका निभाई। दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली की स्थापना करने और फाइनेंशियल संकट से उबरने के लिए, ट्रस्ट को दयाल सिंह कॉलेज, करनाल की जमीन बेचनी पड़ी। 1978 में, फाइनेंशियल संकट के कारण, दयाल सिंह कॉलेज (मॉर्निंग और इवनिंग) को एक एग्रीमेंट के जरिए दिल्ली यूनिवर्सिटी को ट्रांसफर किया गया। ट्रस्ट सोसाइटी को बदले में कोई मुआवजा नहीं मिला। लेकिन एग्रीमेंट के क्लॉज 12 के अनुसार, 'संस्थान को दयाल सिंह कॉलेज के नाम से ही जाना जाता रहेगा।' फलतः व्यक्ति या सरकार को एग्रीमेंट की शर्तों का उल्लंघन करने का अधिकार नहीं है। नवंबर 2017 में भी दयाल सिंह कॉलेज गवर्निंग बॉडी के तत्कालीन चेयरमैन अमिताभ सिन्हा इसका नाम बदलने के लिए दृढ़ थे। उन्होंने कहा कि इवनिंग कॉलेज का नाम बदलकर 'पंडित मदन मोहन मालवीय कॉलेज' कर दिया जाएगा। 17 नवंबर, 2017 को, वे कॉलेज गवर्निंग बॉडी से दयाल सिंह कॉलेज का नाम बदलकर 'वंदे मातरम कॉलेज' करने और उसे मॉर्निंग शिफ्ट में शिफ्ट करने का प्रस्ताव पास करवाने में सफल रहे, जिसकी फाइनल मंजूरी यूनिवर्सिटी के वाइस–चांसलर को देनी थी। इस कदम की सोशल मीडिया, अखबारों और टेलीविजन चौनलों पर कड़ी आलोचना हुई। इसे शैक्षणिक संस्थानों की स्वायत्तता पर एक खतरनाक हमला भी माना गया। भाजपा की सहयोगी शिरोमणि अकाली दल व कांग्रेस नेताओं ने भी इस फैसले की आलोचना की। दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधन समिति के महासचिव मनजीत सिंह सिरसा और राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष त्रिलोचन सिंह ने प्रस्ताव वापस लेने की मांग की। एसजीपीसी के अध्यक्ष सरदार अवतार सिंह मक्कड़ ने भी इसका विरोध किया। 27 नवंबर, 2017 को दिल्ली के रकाबगंज गुरुद्वारे में आयोजित शिक्षाविदों और विद्वानों की बैठक की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार कुलदीप नैयर ने की। बैठक का मुख्य उद्देश्य दिल्ली में दयाल सिंह इवनिंग कॉलेज का नाम बदलने से रोकने के लिए भारत सरकार पर दबाव बनाने की रणनीति बनाना था। 19 दिसंबर, 2017 को राज्यसभा में शून्यकाल के दौरान, कांग्रेस सांसदों आनंद शर्मा, अंबिका सोनी, ऑस्कर फर्नांडीस, एस. एस. ढींडसा और बी.के. हरिप्रसाद सहित कई सांसदों ने नरेश कुमार गुजराल के प्रस्ताव का समर्थन किया।

उथल–पुथल के बीच निर्णायक मोड़ पर ईरान

ईरान अपनी आजादी कायम रखने को कटिब) है और वैश्विक ऊर्जा बाजार सहित एक महत्वपूर्ण भू–रणनीतिक खिलाड़ी के तौर पर अपनी जगह बनाए है। इसके पास कच्चे तेल का दुनिया का चौथा सबसे बड़ा और प्राकृतिक गैस का दूसरा सबसे बड़ा भंडार है। ईरान काफी मांग वाले अपने हल्के तेल, यानी कम सल्फर मात्रा वाले कच्चे तेल, का प्रतिदिन लगभग दो मिलियन बैरल...

ईरान में विभिन्न मुद्दों को लेकर विरोध प्रदर्शन व उन पर सरकार की सख्त प्रतिक्रिया जारी है। ये इस इस्लामी गणराज्य के लिए अस्तित्व को चुनौती प्रतीत होते हैं। ऐसे में वहां सत्ता परिवर्तन की मांग शायद जल्दबाजी हो , लेकिन सरकार के अंदर बदलाव होने लाजिमी हैं। पिछले करीब तीन सप्ताह में हुए अभूतपूर्व देशव्यापी विरोध प्रदर्शनों ने इस्लामिक गणराज्य ईरान को हिलाकर रख दिया है। ये जल्द ही रुक जाएंगे, ऐसा कोई संकेत दिखाई नहीं देता। ईरान में सामाजिक अशांति नई बात नहीं, लेकिन हाल में हुए सार्वजनिक प्रदर्शनों की तीव्रता से लगता है कि देश के अस्तित्व पर संकट खड़ा हो गया है। इनको फरवरी, 1979 में हुई इस्लामिक क्रांति के बाद से, 47 सालों में सत्ता के समक्ष सबसे बड़ा खतरा माना जा रहा है। देश में लॉकडाउन के अलावा अंतर्राष्ट्रीय संचार और टेलीफोन सेवाएं बंद हैं। कहा जा रहा है कि सरकार ने वैश्विक सैटेलाइट संचार नेटवर्क 'स्टारलिंक' ब्लॉक करने को रूसी या चीनी मिलिट्री ग्रेड तकनीक का इस्तेमाल किया। अफवाहों और सोशल मीडिया पर भ्रामक जानकारी वाले माहौल में ईरान में मौजूदा स्थिति का सटीक अंदाजा मुश्किल है। लेकिन, कई स्रोतों की रिपोर्ट है कि हाल के दिनों में सुरक्षा बलों ने बेरहमी से कार्रवाई कीय जिसकी वजह से अब तक बड़ी संख्या में मौतें हो चुकी हैं और हजारों लोग हिरासत में लिये। आने वाले दिन या शायद हफ्ते, तय करेंगे कि व्यापक तौर पर नापसंद मौजूदा सत्ता का भविष्य क्या होगा, हालांकि यह लंबे समय से कायम है और अगले महीने अपने 48वें साल में कदम रखने वाली है। 28 दिसंबर से शुरू होकर, संपूर्ण ईरान में बड़े पैमाने पर प्रदर्शन और दंगे हुए। आरंभ तेहरान के ग्रैंड बाजार से हुआ। व्यापारी दुकानें बंद कर धरने पर बैठ गए, उनके विरोध की मुख्य वजह थी ईरानी मुद्रा, रियाल का अपने मुख्य मूल्य मापदंड अमेरिकी डॉलर के बरक्स बेतरह गिरना। राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन की सरकार द्वारा वित्तीय एवं आर्थिक सुधार करने के फैसले ने आग में घी डाल दिया, इसके पीछे हर चीज

पर लगे अमेरिकी प्रतिबंध भी एक वजह है। एक प्रस्ताव था कि तरजीही विनिमय दर व्यवस्था वापस ले ली जाए, जिसके तहत व्यापार संघ, जिन्हें वहां 'बाजारी' कहा जाता है, उन्हें भारी सब्सिडी पर बहुत कम दाम पर विदेशी मुद्रा मुहैया करवायी जाती है। ये 'बाजारी' नियंत्रित विदेशी मुद्रा प्रणाली के तहत तरजीही सरकारी फंड की उपलब्धता का पूरा बचाव करते आये हैं। पेजेशकियन के फैसले ने सत्ताधारी मौलाना वर्ग को इस मुद्दे पर बांट दिया, जो अर्थव्यवस्था पर बाजारियों के प्रभाव से परिचित हैं। जो विरोध प्रदर्शन बाजारियों द्वारा दबाव बनाने की तरकीब के तौर पर शुरू हुए, वे जंगल में आग की तरह फैल गए, जिसमें छात्र और समाज का हरेक तबका शामिल हो गया, उनमें हताशा–निराशा लंबे समय से है, खासकर युवाओं में। इसके कुछ कारण हैं, अर्थव्यवस्था एवं रोजगार की खस्ता हालत, उच्च महंगाई दर (अनुमानित 45 फीसदी) और सरकार का आर्थिक कुप्रबंधन, भ्रष्टाचार व सरकारी छूट का अनुचित लाभ लेने से लोगों में उपजी निराशा। ईरान में पिछले विरोध प्रदर्शनों का पैटर्न, जिसमें सबसे ताजा 2022 का हिजाब–विरोधी प्रदर्शन था, कुछ ऐसा रहा कि लोगों की नाराजगी शुरू में तो किसी सामाजिक (हिजाब–विरोध) या आर्थिक शिकायत से भड़की, लेकिन तुरंत ही सियासी बगावत में बदल गयी। मौजूदा आंदोलन भी उसी पैटर्न पर है। हालांकि, इस बार, विरोध, और विरोध करने वालों की विविधता दृजिसमें सभी वर्ग शामिल हैंद्द भरा विरोध जिस तेजी से फैला वैसी पहले कभी नहीं देखी। एक अतिरिक्त अवयव यह कि फलस्तीन, सीरिया व लेबनान के मामले में ईरानी सरकार के दखल से पड़े आर्थिक बोझ पर नाराजगी खुलकर जाहिर हुई है। सरकार के खिलाफ आम नारा 'तानाशाह को सजाए मौत'जिससे अभिप्राय सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई हैद्द के अलावा अब 'न गाजा न लेबनान के लिए, मेरी जान है ईरान के लिए' जैसे नारे भी लग रहे हैं। एक नया अवयव है 'जाविद शाह' (शाह अमर रहे) का नारा है, यानी अमेरिका में निर्वासन काट रहे युवराज रेजा पहलवी। पहलवी इस बगावत का श्रेय चाहते हैं और खुद को बतौर सही विकल्प पेश कर रहे हैं। हालांकि ईरान की बिखरी राजनीति और पहलवी की ईरानियों की इस पीढ़ी से दूरी के चलते यह मुश्किल काम लगता है। राजशाही ईरानियों के बीच विवादास्पद मुद्दा है। वर्तमान सामाजिक उथल–पुथल की तीव्रता और उस पर सरकार की जानी–पहचानी सख्ती ने पश्चिम एशिया के सबसे महत्वपूर्ण भू–रणनीतिक खिलाड़ियों में एक की अंदरूनी स्थिरता को लेकर चिंताएं पैदा कर दी हैं। जो हालात बन रहे, वे ईरान के पड़ोसियों के लिए भी गहरी चिंता की वजह होंगे। ईरान पश्चिम एशिया का दूसरा सबसे बड़ा देश है, जो भू–रणनीतिक एवं धार्मिक तौर पर अपने कट्टर प्रतिद्वंद्वी, सऊदी अरब के बाद दूसरे नंबर पर है। दोनों मुल्क सुन्नी और शिया पंथ की विचारधाराओं के जरिए इस्लामिक उम्माह की सरदारी के लिए होड़ में हैं। जबकि इस्लाम के ये दोनों पंथ भारत में शांति के साथ सह–अस्तित्व में हैं, यह परिदृश्य ओआईसी (ऑर्गेनाइजेशन ऑफ इस्लामिक कोऑपरेशन) के किसी एक भी देश में नजर नहीं आता। भारत और ईरान के बीच पारंपरिक रूप से करीबी ऐतिहासिक रिश्ते रहे और हाल के वर्षों में और प्रगाढ़ हुए, खासकर भारत के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण चाबहार पोर्ट के प्रबंधन एवं परिचालन की भागीदारी के जरिये। ब्रिक्स और एससीओ की सदस्यता दोनों देशों को सहयोग बढ़ाने देने में मददगार है। अकसर इस बात को कम आंका जाता है कि ईरान ने दशकों वाणिज्यिक और आर्थिक प्रतिबंध झेले, फिर भी कुशलता से खुद को अलग–थलग पड़ने से बचाने में कामयाब रहा।

ईरान में टेंशन जारी, डिफेंस डील के बाद जमीन वाली तैयारी, मिडिल ईस्ट में क्या नया गुल खिलाएगी सऊदी-पाक की यारी

पाकिस्तान वायु सेना ने ईरान संकट के बीच सऊदी अरब की सेना के साथ संयुक्त सैन्य अभ्यास करने के लिए हाथ मिलाया है। गौरतलब है कि इन दोनों देशों के अलावा आठ अन्य देश भी इस अभ्यास में भाग ले रहे हैं। खबरों के अनुसार, पाकिस्तान वायु सेना (पीएएफ) का एक दल19 जनवरी को सऊदी अरब पहुंचा, जो एक बहुराष्ट्रीय हवाई युद्ध अभ्यास में हिस्सा लेने जा रहा है। यह दल एफ–16 ब्लॉक–52 लड़ाकू विमानों से लैस है। यह जानकारी सोमवार को सेना के मीडिया विंग, इंटर–सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस (आईएसपीआर) द्वारा साझा की गई। आईएसपीआर ने अपने बयान में कहा कि पीएएफ की टुकड़ी सऊदी अरब के किंग अब्दुलअजीज एयर बेस पर उतरी है। इस अभ्यास में सऊदी अरब,

पाकिस्तान, फ्रांस, इटली, ग्रीस, कतर, बहरीन, जॉर्डन, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका के लड़ाकू विमान और युद्ध सहायता इकाइयां भाग ले रही हैं।

ईरान संकट के बीच दो मुस्लिम देश की सेना ने मिलाए हाथ बहुराष्ट्रीय अभ्यास का नाम स्पीयर्स ऑफ विक्ट्री–2026 है। यह अभ्यास भाग लेने वाली वायु सेनाओं के बीच अंतर–संचालनीयता, परिचालन समन्वय, आपसी समझ और क्षमता विकास को बढ़ाने के लिए एक मजबूत मंच प्रदान करेगा।

इसमें बड़े पैमाने पर सैन्य तैनाती और रात्रिकालीन हवाई अभियानों पर विशेष जोर दिया जाएगा।

यह अभ्यास एकीकृत खुफिया, निगरानी और टोही (आईएसआर) और उन्नत इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणालियों से जुड़े मिशनों का भी आयोजन करेगा।

आईएसपीआर ने कहा कि इस बहुराष्ट्रीय मंच में भाग लेकर, पाकिस्तान वायु सेना का उद्देश्य सहयोगी वायु सेनाओं के साथ समन्वय को और मजबूत करना है।

बयान के अनुसार, इस अंतरराष्ट्रीय तैनाती के लिए, पीएएफ के लड़ाकू विमान पाकिस्तान में अपने घरेलू ठिकानों से सीधे सऊदी अरब के लिए उड़ान भरे, जिससे पीएएफ की लंबी दूरी की परिचालन और तैनाती क्षमता का प्रदर्शन हुआ।

टीम इंडिया में बदलाव की लहर, विराट कोहली और रोहित शर्मा का बीसीसीआई वार्षिक अनुबंध में घटेगा कद!

विराट कोहली और रोहित शर्मा को बीसीसीआई की 2026–27 सीजन की वार्षिक केंद्रीय अनुबंध सूची में स्थान परिवर्तन का सामना करना पड़ सकता है। दोनों वरिष्ठ बल्लेबाजों ने 2024 में टी20 और 2025 में टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले लिया है, इसलिए वे अब केवल एक ही प्रारूप में सक्रिय हैं। इसी वजह से प्रबंधन उन्हें ग्रेड बी में स्थानांतरित करने पर विचार कर रहा है। एएनआई के अनुसार, बीसीसीआई एक संशोधित अनुबंध संरचना की घोषणा करने की तैयारी कर रहा है, जिसमें ए श्रेणी को पूरी तरह से समाप्त किया जा सकता है।

कोहली और रोहित वर्तमान में रवींद्र जडेजा और जसप्रीत बुमराह के साथ ए श्रेणी में हैं, और इन सभी को इस श्रेणी के तहत सालाना 7 करोड़ रुपये मिलते हैं। यदि ये बदलाव स्वीकृत हो जाते हैं, तो जडेजा और बुमराह को ग्रेड ए में स्थानांतरित किया जा सकता है। यह प्रस्ताव मुख्य चयनकर्ता अजीत अगरकर द्वारा पहले ही रखा जा चुका है और अंतिम निर्णय लेने से पहले आगामी शीर्ष परिषद की बैठक में इस पर चर्चा होने की उम्मीद है।

अगर बीसीसीआई ए श्रेणी को खत्म कर देता है, तो यह देखना होगा कि क्या कोई नई डी श्रेणी शुरू की जाती है। 2023–24 सीजन में, शासी परिषद ने तेज गेंदबाजी अनुबंध जोड़ा था, जिसके तहत उमरान मलिक, मयंक यादव और आकाश दीप जैसे खिलाड़ियों को शामिल किया गया था और वे पूरे साल एनसीए का हिस्सा रहे थे। अगर इसी तरह की कोई नई श्रेणी फिर से शुरू की जाती है, तो यह देखना दिलचस्प होगा। 2024–25 सीजन के लिए बीसीसीआई का वार्षिक अनुबंध

ग्रेड ए – रोहित शर्मा, विराट कोहली, रवींद्र जड़ेजा, जसप्रित बुमराह। ग्रेड ए – मोहम्मद सिराज, केएल राहुल, शुभमन गिल, हार्दिक पंड्या, मोहम्मद शमी, ऋषभ पंत

ग्रेड बी – सूर्यकुमार यादव, अक्षर पटेल, कुलदीप यादव, यशस्वी जयसवाल, श्रेयस अय्यर ग्रेड सी – रिंकू सिंह, तिलक वर्मा, रुतुराज गायकवाड़, शिवम दुबे, रवि बिश्नोई, वाशिंगटन सुंदर, मुकेश कुमार, संजू सैमसन, अर्शदीप सिंह, प्रसिद्ध कृष्णा, रजत पाटीदार, ध्रुव जुरेल, सरफराज खान, नितीश कुमार रेड्डी, ईशान किशन, अभिषेक शर्मा, आकाश दीप, वरुण चक्रवर्ती, हर्षित राणा

क्रिकेट के साथ कुश्ती खेलने का नसीहत दे गए भाजपा जिलाध्यक्ष कन्हैया पासवान

नड़ौरा की टीम ने अलीगढ़वा को शिकस्त देकर बनी विजेता

दैनिक बुद्ध का संदेश

शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर। शोहरतगढ़ ब्लॉक क्षेत्र के ग्राम पंचायत लुचुइया टोला नडौरा गांव के मैदान में आयोजित नडौरा प्रीमियर लीग क्रिकेट टूर्नामेंट का फाइनल मुकाबला मंगलवार को खेला गया। फाइनल मुकाबले में किंग एलेवेन नड़ौरा ने जहीर एलेवेन अलीगढ़वा को करारी शिकस्त देकर ट्रॉफी अपने नाम की। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए जहीर एलेवेन अलीगढ़वा की टीम ने निर्धारित 12 ओवर में 7 विकेट के नुकसान पर 85 रन बनाए। टीम की ओर से रिंकू पाल ने शानदार 31 रनों की पारी खेलकर दर्शकों का दिल जीत लिया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी किंग एलेवेन नड़ौरा की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए मात्र 8 ओवर में 88 रन बनाकर मुकाबला जीत लिया। विजेता टीम की ओर से आमिर ने 29 रन, जबकि .ष्णा यादव उर्फ छोटू ने 19 रन बनाने के साथ ही 3 विकेट झटके और टीम की जीत में अहम भूमिका निभाई। उत्.ष्ट ऑलराउंड प्रदर्शन के लिए .ष्णा यादव उर्फ छोटू को मैन ऑफ द मैच चुना गया।मुख्य अतिथि भाजपा जिलाध्यक्ष कन्हैया पासवान ने मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार

प्रदान किया। वहीं उपविजेता टीम जहीर एलेवेन अलीगढ़वा के कप्तान जहीर को ट्रॉफी के साथ ध्8000 नकद पुरस्कार दिया गया। विजेता टीम किंग एलेवेन नड़ौरा के कप्तान अमित उपाध्याय को ट्रॉफी के साथ ध्16000 नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष कन्हैया पासवान ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में अपार खेल प्रतिभाएं छिपी हुई हैं। ऐसे आयोजन युवाओं को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर देते हैं। खेल न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है, बल्कि मानसिक विकास में भी सहायक होता है। उन्होंने युवाओं से हार–जीत की परवाह किए बिना खेलों में बढ़–चढ़कर भाग लेने का आह्वान किया।टूर्नामेंट के आयोजक अंशिका फर्टिलाइजर एंड ट्रेडर्स के प्रोपराइटर विवेक उपाध्याय एवं संजय मिश्रा रहे। कार्यक्रम में भाजपा जिलाध्यक्ष कन्हैया पासवान, प्रधान संगठन जिलाध्यक्ष डॉ. पवन मिश्रा, संतोष पासवान, थानाध्यक्ष नवीन कुमार सिंह, सूर्य प्रकाश पाण्डेय, शिवशक्ति शर्मा, राकेश तिवारी, अनिल कुमार श्रीवास्तव, मुस्तन शेरुल्लाह, कमलेश मिश्रा, राकेश राज, श्रवण कुमार पटवा, अरुण उपाध्याय, प्रकाश उर्फ चिंटू, राकेश बाबा, अमित उपाध्याय, श्रवण कुमार उपाध्याय, राजकुमार उपाध्याय, विनोद उपाध्याय, अश्विनी मिश्रा, कुबेर नाथ उपाध्याय, कालीचरन, अर्जुन शर्मा सहित बड़ी संख्या में खेल प्रेमी उपस्थित रहे। कमेटी अध्यक्ष अमित उपाध्याय, उपाध्यक्ष गोलू उपाध्याय एवं कमेटी सदस्य संदीप, निखिल, निलेश, रुपेश त्रिपाठी, स्कंद, सुंदरम, साईराज, कालीचरन, इन्द्रजीत सहित अन्य सदस्यों ने सफल आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह टूर्नामेंट क्षेत्र की उभरती खेल प्रतिभाओं को आगे बढ़ने का मजबूत मंच प्रदान करेगा।

ट्रैफिक पुलिस पर लाइसेंस होने के बावजूद चालान करने का आरोप

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। इन दिनों सोशल मीडिया पर एक वीडियो काफी

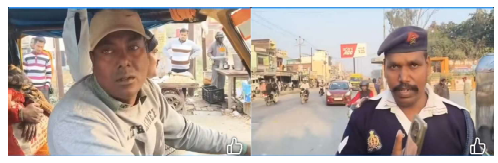

वायरल हो रहा है जिसमें जिला मुख्यालय के साड़ी चौराहे पर एक ऑटो वाला ट्रैफिक पुलिस पर 5000 का चालान करने का आरोप लगता है वीडियो में ई रिक्शा चालक ने आरोप लगाते हुए कहा कि मेरे पास सभी कागज और लाइसेंस है लेकिन पैसा ना देने के कारण ट्रैफिक पुलिस ने मेरा 5000 का चालान कर दिया है इस दौरान किसी युवक द्वारा यह वीडियो बनाया गया युवक ने वीडियो में पूछा कि चालान कितने का है तो ई रिक्शा चालक ने बताया कि 5000 का चालान किया गया है इसी दौरान ट्रैफिक पुलिस भी पहुंच जाती है ट्रैफिक पुलिस जब करती है कि उनके पास यह डॉक्यूमेंट नहीं है इस दौरान ई रिक्शा चालक अपने पास मौजूद सारे डॉक्यूमेंट दिखने लगता है जिसमें लाइसेंस वगैरह सब सही होता है यदि यह सही है तो निश्चित रूप से ट्रैफिक पुलिस पर लगाम लगाने की जरूरत है अन्यथा गरीबों का चालान इसी प्रकार होता रहेगा दैनिक बुद्ध का संदेश सोशल मीडिया पर वायरल इस वीडियो की पुष्टि नहीं करता है।

नौतनवा में श्रद्धा और धूमधाम से निकला मां बनैलिया की 35वीं भव्य शोभायात्रा, नगर में दिखा उत्सव का रंग

(ठाकुर सोनी)

नौतनवा, महाराजगंज।

विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी महाराजगंज जनपद के नौतनवा नगर स्थित मां बनैलिया की भव्य शोभायात्रा मंदिर प्रांगण से श्रद्धा और धूमधाम से निकला।

यह आयोजन विगत 35 वर्षों से निकाला जा रहा है जब मंदिर का जीर्णोद्धार तथा नई मूर्ति की स्थापना की गई थी उसे समय मंदिर के पुजारी बाबा काशी दास जी थे। तभी से अनवरत यह शोभायात्रा 20 जनवरी को प्रत्येक वर्ष निकाली जाती है।

जिसमें नगर नौतनवा सहित आसपास के 10 दोनों गांव के लोग तथा मित्र राष्ट्र नेपाल के लोगों का भी आगमन होता है सभी तन मन धन से इस वार्षिक उत्सव में सम्मिलित होकर अपना योगदान देते हैं।

मंदिर की कमेटी इस आयोजन की बागडोर अपने हाथों में लेकर सुचारू रूप से संपन्न करवाती है ऐसे में हर वर्ग जाति धर्म के लोग इस भव्य शोभायात्रा की प्रत्यक्षदर्शी बनते हैं।

पूरा नगर दुल्हन की तरह सजाया जाता है तथा जगह–जगह हर समुदाय के लोग अपने संगठन या समिति की तरफ से प्रसाद का स्टॉल भी लगवाते हैं और दर्शनार्थियों को प्रसाद सहित अन्य खाद्य पदार्थ का वितरण करते हैं।

शोभायात्रा के दौरान माँ

बनेलिया की भव्य झांकी के साथ साथ अन्य देवी देवताओं की भी झांकियां निकल जाती है जिसे इस वर्ष भी दर्जनों की संख्या में ट्रक, ट्रैक्टर ट्राली एवं अन्य वाहनों पर सुंदर–सुंदर झांकियां सजाई गई थी जो आकर्षण का केंद्र था, इन झांकियां को देखने के लिए दूर–दूर से नौतनवा में आए थे।

वही पिछले 9 वर्षों से विश्वकर्मा समाज विश्वकर्मा समाज इस शोभायात्रा का अहम हिस्सा बनकर अपना योगदान देता है। प्रसाद वितरण के साथ–साथ मंदिर से जुड़े पुजारी, मंदिर के कमेटी के लोगों सहित सामाजिक कार्यकर्ता एवं पत्रकारों को अंग वस्त्र ओढ़ा कर सम्मानित किया।

विश्वकर्मा आर्मी महराजगंज के जिलाध्यक्ष रोहन शर्मा ने बताया की मां बनैलिया का शोभायात्रा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी धूमधाम से निकाला, जिसकी अध्यक्षता संतोष जायसवाल कर रहे है। वही इस शोभायात्रा के दौरान हम सब विश्वकर्मा समाज के लोग वरिष्ठ जनों को सम्मानित कर शोभायात्रा को यादगार बनाने की कोशिश किया जिससे शोभायात्रा में कड़ी परिश्रम कर रहे वरिष्ठ जनों का सम्मान हो सके। सम्मान समारोह एंव प्रसाद वितरण के दौरान विश्वकर्मा आर्मी के राष्ट्रीय अध्यक्ष चंदन विश्वकर्मा , प्रदेश अध्यक्ष संजय विश्वकर्मा , विधान सभा अध्यक्ष रघुपति शर्मा , राजन वर्मा , आशिष सोनी, ठाकुर सोनी, एडवोकेट उमेशचंद्र विश्वकर्मा , राहुल शर्मा , जीतेन्द्र शर्मा , राजन वर्मा , सुनील शर्मा , रामराज शर्मा , राधेश्याम विश्वकर्मा , राजेन्द्र शर्मा , गोपाल शर्मा , नीरज शर्मा, दुर्गेश वर्मा , अनिल वर्मा , चन्द्रकेश विश्वकर्मा , अभिमन्यु शर्मा , श्रवण शर्मा , सागर विश्वकर्मा , अशोक वर्मा , भानु शर्मा , सुरेन्द्र विश्वकर्मा , बैजूनाथ वर्मा , रमेश विश्वकर्मा, सोभित वर्मा, कमलेश वर्मा , रमेश शर्मा , श्रीपति शर्मा, अंगद विश्वकर्मा सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

शिवपति महाविद्यालय में सड़क सुरक्षा पर नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता आयोजित

दैनिक बुद्ध का संदेश

शोहरतगढ़/सिद्धार्थनगर। शिवपति स्नातकोत्तर महाविद्यालय

शोहरतगढ़ में सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान के अन्तर्गत एक प्रभावशाली नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता मंगलवार को आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती को पुष्प अर्पित कर श्रद्धापूर्वक की गई। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और सड़क सुरक्षा जैसे गम्भीर विषय को रचनात्मक अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत किया। बी0एड0 विभाग की छात्रा इन्दु ने प्रथम, प्रियंका ने द्वितीय तथा छात्र विलकलिंटन ने तृतीय स्थान प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। प्राचार्य प्रो0 अरविन्द कुमार सिंह ने अपने प्रेरणादायक अभिभाषण में यातायात नियमों के पालन, हेलमेट व सीट बेल्ट के प्रयोग तथा मोबाइल के उपयोग से बचने जैसे महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डालते हुए युवाओं से अपील की कि वे स्वयं सुरक्षित रहें और समाज को भी जागरूक करें। कार्यक्रम का संचालन बी0एड0 विभाग के सहायक आचार्य डॉ0 प्रवीण कुमार ने कुशलता से किया, जबकि निर्णायक मण्डल में डॉ0 अमित सिंह एवं डॉ0 तुषार रंजन ने निष्पक्ष मूल्यांकन की भूमिका निभाई। यह आयोजन विद्यार्थियों में सड़क सुरक्षा के प्रति चेतना जागृत करने की दिशा में एक सराहनीय प्रयास रहा।

धूम–धाम से निकाला गया कलशयात्रा, आज श्रीमद्भागवत कथा प्रारम्भ

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। ग्राम हरैया बाबू में स्व देवेन्द्र प्रताप सिंह पूर्व प्रमुख सांथा की पत्नी नीला सिंह माता अखंड प्रताप सिंह अध्यक्ष सिविल सिद्धार्थ बार एसोसिएशन सिद्धार्थनगर ने श्रीमद्भागवत कथा श्रवण करने के लिए विधि–विधान से कलशयात्रा निकाली। कलशयात्रा पंडित अवधेश शास्त्री, पंडित अम्बरीष चतुर्वेदी, पंडित अरुणेश तिवारी, पंडित बृजबिहारी पाण्डेय, पंडित राधेश्याम शुक्ला, पंडित राघवेंद्र द्विवेदी, पंडित मुरलीधर मिश्रा, पंडित कपिल देव तिवारी, पंडित चन्द्र प्रकाश तिवारी के नेतृत्व में निकाली गई जिसमें सभी मंदिरों से पूजन करते हुए अनादि प्रताप सिंह, रश्मि प्रताप सिंह, निशा सिंह, अंजलि सिंह अमेय प्रताप सिंह, रिधान सिंह,किरन सिंह ने बूढ़ी राप्ती नदी में कलश में जल भरा गया और पुनः वापस आकर विधि–विधान से पूजन किया गया। कलशयात्रा में अशोक प्रताप सिंह, सुरेश सिंह, विनोद सिंह, सुभाष चौधरी, रामवृक्ष,फूलचंद,हरीश सिंह, अमित सिंह, राकेश सिंह, महबूब,लोलई, केवल,हरिमाधव पाण्डेय,सिद्धू,रायबहादुर,भूमि,शारदा, पप्पू तिवारी,मार्ग देव तिवारी,रम्मज,बुद्धू,शंकर साहनी, बैकुंठ तिवारी मनीष शुक्ला, राघवेंद्र यादव, जोगेंद्र पाण्डेय,राजिव पाण्डेय,महेश पाण्डे, रामफेर तिवारी, रघुवंश चौबे,टांसे चौधरी,फेरी गोड़,चुल्हई,रामअचल, अशोक शुक्ला, दीपक पाण्डेय, शंकराचार्य शुक्ला,तीर्थ केवट, मनीराम प्रजापति, सुरेंद्र गुप्ता, अमरजीत गुप्ता, ज्ञानदास, बुद्धिराम, अमृत, रामफेर, रमेश यादव आदि हजारों महिला–पुरुष की उपस्थिति रही।

मुण्डेरवा पुलिस ने अवैध तमंचा व कारतूस के साथ हिस्ट्रीशीटर को किया गिरफ्तार

दैनिक बुद्ध का संदेश

बस्ती। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के तहत मुण्डेरवा पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी है। पुलिस अधीक्षक अभिनन्दन के निर्देश पर, अपर पुलिस अधीक्षक श्यामकान्त के पर्यवेक्षण एवं क्षेत्राधिकारी रुधौली कुलदीप सिंह यादव के मार्गदर्शन में मुण्डेरवा पुलिस द्वारा संदिग्ध वाहनों व व्यक्तियों की चेकिंग की जा रही थी। इसी दौरान थाना मुण्डेरवा पुलिस ने बस्ती.कांटे मार्ग पर ग्राम अहरा बुधा नाला के पास से एक हिस्ट्रीशीटर अभियुक्त को अवैध हथियार के साथ गिरतार किया। गिरतार अभियुक्त की पहचान शमशाद पुत्र इशराइल, निवासी जगदीशपुर नटबाग, थाना मुण्डेरवा, जनपद बस्ती के रूप में हुई है। अभियुक्त के कब्जे से एक अवैध 12 बोर तमंचा, एक 12 बोर कारतूस तथा एक मोटरसाइकिल बरामद की गई। पुलिस के अनुसार गिरतारी 20 जनवरी 2026 को तड़के लगभग 01रू45 बजे की गई। अभियुक्त के विरुद्ध थाना मुण्डेरवा पर मु0अ0सं0 13/2026 धारा 3/25 आर्म्स एक्ट के अंतर्गत मुकदमा दर्ज कर विधिक कार्यवाही पूरी करते हुए उसे न्यायालय भेजा

जा रहा है। पुलिस ने बताया कि अभियुक्त के विरुद्ध पूर्व से भी कई आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं। थाना मुण्डेरवा पर दर्ज मु0अ0सं0 170/2025 धारा 331(4), 305(ए) बीएनएस की विवेचना पूर्व से प्रचलित है। पूछताछ के दौरान अभियुक्त ने स्वीकार किया कि उसने अपने साथियों के साथ मिलकर कई बार चीनी मिल से लोहे की चोरी की है। पुलिस द्वारा शेष अभियुक्तों की तलाश की जा रही है। अभियुक्त का आपराधिक इतिहास मु0अ0सं0 13/2026 धारा 3/25 आर्म्स एक्ट मु0अ0सं0 170/2025 धारा 331(4), 305(ए) बीएनएस मु0अ0सं0 274/2020 धारा 380, 457 आईपीसी मु0अ0सं0 305/2020 धारा 379, 411 आईपीसी मु0अ0सं0 128/2021 धारा 379, 411 आईपीसी गिरतारी करने वाली पुलिस टीम– थानाध्यक्ष प्रदीप कुमार सिंह, उपनिरीक्षक राजेन्द्र यादव, उपनिरीक्षक जावेद खान, हेड कांस्टेबल देवानन्द यादव, हेड कांस्टेबल पुनीत पाठक एवं कांस्टेबल कामोद कुशवाहा शामिल रहे।

यातायात नियमों का पालन व्यक्तिगत एवं सामाजिक हित में आवश्यक: डॉ अतुल कुमार पाण्डेय

दैनिक बुद्ध का संदेश

दसिया/बस्ती।राजकीय महाविद्यालय सेहमों बस्ती में सड़क सुरक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत दो दिवसीय प्रतियोगिता का समापन रील निर्माण स्पर्धा के समापन के साथ सम्पन्न हुआ।इस आयोजन के द्वारा छात्र छात्राओं में भाषण , लघु नाटक तथा रील निर्माण कर यातायात के प्रति जागरूकता पैदा करने तथा इसे सामाजिक दायित्व के रूप में लेने का आह्वान किया गया। प्राचार्य डॉ अतुल कुमार पांडे की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में निर्णायक के रूप में डॉक्टर श्याम मनोहर पांडेय तथा डॉक्टर रिजवान नैना, खुशी और प्रियंका ने प्राप्त किया। इस स्पर्धा में द्वितीय स्थान बी ए पंचम सेमेस्टर की छात्राओं ने प्राप्त किया। रील निर्माण प्रतियोगिता में बी ए प्रथम वर्ष के शैलेन्द्र कुमार ने प्रथम तथा विकेश ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।इस अवसर पर डॉ प्रीति वर्मा, डॉ कृष्ण कांत मिश्र, परमानन्द सिंह, विजय कुमार मिश्रा, कमलेश कन्नौजिया, रिंकू सहित बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन सड़क सुरक्षा कार्यक्रम के प्रभारी डॉ आनन्द पाण्डेय ने किया।

अध्यक्षीय उद्बोधन में डा अतुल कुमार पाण्डेय ने कहा कि यातायात के नियमों के पति हम सभी को जागरुक होना चाहिए।यह व्यक्तिगत हित और पारिवारिक कल्याण के साथ साथ सामाजिक दायित्व के लिए जरुर है। भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान रिचा चौधरी द्वितीय स्थान लाडली और तृतीय स्थान नैना प्रजापति को मिला। जबकि नाटक प्रतियोगिता में प्रथम स्थान दिए द्वितीय वर्ष प्रति सेमेस्टर की छात्राएं कविता,

नितिन नबीन के भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने पर कार्यकर्ताओं ने दी बधाई

दैनिक बुद्ध का संदेश

बलरामपुर। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता नितिन नबीन के भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर निर्वाचित होकर कार्यभार संभालने के उपलक्ष्य में जनपद स्थित भाजपा कार्यालय अटल भवन में हर्षोल्लास का माहौल रहा। इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष रवि कुमार मिश्रा के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं को मिठाई खिलाकर बधाई एवं शुभकामनाएं दी गईं। जिलाध्यक्ष रवि कुमार मिश्रा ने कहा कि नितिन नबीन के नेतृत्व में पार्टी संगठन और अधिक सशक्त होगा तथा राष्ट्रहित और जनकल्याण के कार्यों को नई गति मिलेगी। उन्होंने इसे पार्टी के लिए गौरवपूर्ण क्षण बताया। उक्त अवसर पर जिला महामंत्री वरुण सिंह,जिला महामंत्री बिंदु विश्वकर्मा,जिला उपाध्यक्ष बृजेंद्र तिवारी,जिला उपाध्यक्ष आद्या सिंह,पूर्व जिला महामंत्री डॉ.अजय सिंह पिंकू,जिला मंत्री अवधेश त्रिपाठी, एलडीबी चेयरमैन घनश्याम तिवारी,जिला कार्यसमिति सदस्य संदीप उपाध्याय,महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष ललिता तिवारी,महिला मोर्चा महामंत्री साधना पांडे,मंडल अध्यक्ष सुरेश त्रिपाठी,राकेश गुप्ता,सभासद सरोज तिवारी,मंडल महामंत्री मनीष त्रिपाठी,दिनेश मिश्रा सहित बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान कार्यकर्ताओं ने एक–दूसरे को मिठाई खिलाकर खुशी जाहिर की और पार्टी की एकजुटता एवं संगठनात्मक मजबूती का संदेश दिया

डीएम ने सीएमओ कार्यालय का किया औचक निरीक्षण

दैनिक बुद्ध का संदेश

बलरामपुर। जनपद में स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता एवं प्रशासनिक व्यवस्था को सु.ढ़ करने के उद्देश्य से जिलाधिकारी विपिन कुमार जैन ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने कार्यालय की कार्यप्रणाली, अभिलेखों के रख–रखाव, बजट प्रबंधन एवं औषधि भंडारण व्यवस्था की विस्तृत समीक्षा की तथा संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने मेडिकल बोर्ड कक्ष, डिस्पैच रजिस्टर, पीसीपीएनडीटी कक्ष, वैक्सीन स्टोर, लेखा कक्ष, आईडीएसपी सेल, क्वालिटी सेल, आयुष्मान भारत कक्ष, जिला मलेरिया कक्ष एवं मेडिसिन स्टोर का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा ललिया जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि सभी अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारियों एसीएमओ का स्पष्ट कार्य–विभाजन सुनिश्चित किया जाए, ताकि प्रत्येक जिम्मेदारी निर्धारित हो और कार्यों में पारदर्शिता एवं प्रभावशीलता बनी रहे। उन्होंने

कार्यालय में अभिलेखों के व्यवस्थित रख–रखाव पर विशेष ध्यान देते हुए निर्देशित किया कि सभी अलमारियों रेक में रखे अभिलेखों की सूची जानकारी स्पष्ट रूप से चस्पा की जाए, जिससे आवश्यकता के समय दस्तावेज शीघ्र उपलब्ध हो सकें। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने मेडिकल रिम्बर्समेंट से संबंधित लंबित प्रकरणों की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि ऐसी सभी फाइलों का शीघ्र निस्तारण सुनिश्चित किया जाए, ताकि कर्मचारियों हितग्राहियों को अनावश्यक विलंब न हो। जिलाधिकारी ने विभिन्न मदों में उपलब्ध बजट की समीक्षा करते हुए कहा कि वित्तीय वर्ष समाप्ति के निकट है, अतः सभी स्वी.त बजट का समयबद्ध एवं प्रभावी उपयोग सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने निर्देश दिए कि सभी सामुदायिक एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर आवश्यकतानुसार फर्नीचर व्यवस्था एवं रंग–रोगन हेतु उपलब्ध बजट का नियमानुसार उपयोग किया जाए, जिससे स्वास्थ्य संस्थानों में बेहतर वातावरण व सुविधाएं उपलब्ध हो सकें। मेडिसिन स्टोर के निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने स्टॉक पंजिका का अवलोकन कर दवा स्टॉक का मिलान किया तथा निर्देश दिए कि स्टॉक रजिस्टर नियमित रूप से मेंटेन एवं अपडेट रखा जाए, ताकि किसी भी स्तर पर औषधियों की उपलब्धता प्रभावित न हो। इस दौरान मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ मुकेश रस्तोगी अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी संतोष कुमार श्रीवास्तव व अन्य संबंधित अधिकारी कर्मचारीगण उपस्थित रहें।

आम आदमी पार्टी ने राष्ट्रपति को भेजा ज्ञापन

दैनिक बुद्ध का संदेश

बस्ती। काशी के मणिकर्णिका घाट पर प्राचीन मंदिरों के ध्वस्तीकरण मामले को लेकर रोष है। मंगलवार को आम आदमी पार्टी नेताओं, कार्यकर्ताओं ने जिलाध्यक्ष डा. राम सुभाष वर्मा के नेतृत्व में जिलाधिकारी के प्रशासनिक अधिकारी के माध्यम से राष्ट्रपति को 4 सूत्रीय ज्ञापन भेजा। मांग किया कि धार्मिक आस्था पर हो रहे हमले के जिम्मेदार दोषियों के विरुद्ध तत्काल कठोर कार्रवाई सुनिश्चित कराया जाय। ज्ञापन सौपने के बाद 'आप' जिलाध्यक्ष डा. राम सुभाष वर्मा ने कहा कि काशी के मणिकर्णिका घाट पर प्राचीन मंदिरों के ध्वस्तीकरण धार्मिक आस्था पर सीधा प्रहार है। मणिकर्णिका घाट हिंदू धर्म का सबसे पवित्र स्थल माना जाता है, जहां मोक्ष की मान्यता जुड़ी है। ऐसे पवित्र स्थल पर प्राचीन मंदिरों का ध्वस्तीकरण देशभर के करोड़ों श्रद्धालुओं की भावनाओं को गहरी ठेस पहुंचाने वाला है। सरकार इसे गंभीरता से लेकर दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई सुनिश्चित करे।आम आदमी पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं जिला प्रभारी कुलदीप जायसवाल, प्रान्तीय सचिव पतिराम आजाद ने कहा कि आम आदमी पार्टी का स्पष्ट मत है कि विकास के नाम पर इतिहास, परंपरा और धार्मिक विरासत को मिटाने की अनुमति किसी भी लोकतांत्रिक सरकार को नहीं दी जा सकती। यदि आज प्राचीन मंदिरों को तोड़ने जैसे कृत्यों पर कठोर कार्रवाई नहीं हुई, तो भविष्य में देश के अन्य पौराणिक और धार्मिक स्थलों पर भी इसी प्रकार के हमले किए जाएंगे, जिससे सामाजिक सौहार्द और राष्ट्रीय एकता को गंभीर खतरा उत्पन्न होगा। राष्ट्रपति को भेजे 4 सूत्रीय ज्ञापन में मणिकर्णिका घाट पर तोड़े गए सभी प्राचीन मंदिरों का तत्काल पुनर्निर्माण कराने, मंदिरों के ध्वस्तीकरण का आदेश देने वाले अधिकारियों एवं जिम्मेदार व्यक्तियों की पहचान कर उनके विरुद्ध सख्त कानूनी कार्रवाई करने, किसी भी धार्मिक स्थल के साथ बिना व्यापक जनसहमति और धार्मिक संस्थाओं की अनुमति के किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ पर पूर्ण प्रतिबंध लगाये जाने आदि की मांग शामिल है। ज्ञापन सौंपने के दौरान मुख्य रूप से आशीष जायसवाल, शेषनाथ चौधरी, उमेश कुमार शर्मा, शेषपाल चौधरी, अब्दुल कयूम, डा. राम सजन सूर्यबंशी, विजय कुमार सोलंकी, श्याम नरायन चौधरी के साथ ही 'आप' के अनेक पदाधिकारी, कार्यकर्ता शामिल रहे।

तहसील उतरौला में 171 जोड़ों का सामूहिक विवाह हुआ सम्पन्न

दैनिक बुद्ध का संदेश

बलरामपुर। मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना में उतरौला तहसील मुख्यालय पर एक निजी मैरिज हाल में सामूहिक विवाह समारोह का आयोजन किया गया जिसमें कुरान और गीता के श्लोकों के साथ 171 जोड़ों का विवाह कराया गया। सामूहिक विवाह समारोह में नवविवाहित जोड़ों को आशीर्वाद देते हुए सदर विधायक ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रयास से गरीब पिछड़े व दलित परिवार के युवतियों युवको का विवाह का आयोजन कराकर उन्हें सामाजिक समरसता प्रदान की है। इस विवाह में शामिल नवविवाहित जोड़ा को पचास हजार रुपए का चेक व आशीर्वाद स्वरूप घर गृहस्थी के सभी सामग्री दी

है। सरकार के इस वितरण से ऐसे परिवारों को लाभ मिलेगा जो परिवार अपने लड़कियों का विवाह कर पाने में अस्मर्थ थे। विधायक उतरौला राम प्रताप वर्मा ने नवविवाहित जोड़ों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि इस आयोजन से गरीब पिछड़े व दलित परिवार के युवतियों का विवाह सरकार ने कराकर उनके परिजनों का बोझ हल्का किया है। अब नवविवाहित जोड़े विवाह के बाद सुखी दाम्पत्य जीवन व्यतीत कर सकेंगे। सरकार ने इस योजना में हिन्दू मुस्लिम दोनों समुदाय के युवतियों व युवकों का विवाह कराकर सबका साथ सबका विकास के लक्ष्य को पूरा किया है। एसडीएम उतरौला अभय सिंह ने नवविवाहित जोड़ों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि अधिकारियों ने इस योजना कि लाभ दिलाकर सरकार की महत्वाकांक्षी योजना को पूरा करने में एक कड़ी साबित हुए हैं। आदर्श नगर पालिका परिषद उतरौला अध्यक्ष प्रतिनिधि अनूप चन्द्र गुप्ता ने कहा कि उतरौला नगर में चारों विकास खण्ड श्रीदत्तगंज, बुजुर्ग क्षेत्र के पात्र लाभार्थियों का विवाह कराकर उन्हें नया जीवन प्रदान किया है। इस समारोह में नवविवाहित जोड़ों का नगर में नगर पालिका उतरौला स्वागत करती है और उनके सुखी दाम्पत्य जीवन की कामना करती है। इस समारोह में मुख्य विकास अधिकारी, जिला समाज कल्याण अधिकारी, समस्त खण्ड विकास अधिकारी, सहायक विकास अधिकारी, आदर्श नगर पालिका परिषद उतरौला के अधिकारी व कर्मचारी व तमाम विभागीय अधिकारी मौजूद रहे। आयोजन स्थल पर नवविवाहित जोड़ों व उनके अभिभावकों व अधिकारियों को भोजन कराना गया। नवविवाहित जोड़ों को उपहार दिया गया।

कलेक्ट्रेट परिसर के साइकिल स्टैंड को लेकर 28 को सार्वजनिक नीलामी

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोण्डा। जनपद के कलेक्ट्रेट परिसर के गेट संख्या 1 व 2 के मध्य जिला परिषद कार्यालय की बाउंड्रीवाल के बगल में स्थित साइकिल स्टैंड के संचालन के लिए सार्वजनिक नीलामी आयोजित की जाएगी। यह नीलामी वित्तीय वर्ष 2025–26 की शेष अवधि के लिए निर्धारित की गई है।नीलामी दिनांक 28 जनवरी 2026 को अपराह्न 2 बजे मुख्य राजस्व अधिकारी प्रभारी अधिकारी नजारत,नीलामी अधिकारी के कक्ष में नियत नीलाम शर्तों के अधीन संपन्न होगी। नीलामी में भाग लेने वाले प्रत्येक इच्छुक बोलीकर्ता को अपना पहचान पत्र प्रस्तुत करना होगा तथा (पांच हजार रुपये मात्र) बतौर जमानत राशि नगद जमा करनी होगी। अधिकतम दो बोलीकर्ताओं की जमानत राशि रोककर शेष बोलीकर्ताओं की जमानत राशि नीलामी समाप्ति के पश्चात उसी दिन वापस कर दी जाएगी।अधिकतम बोली लगाने वाले बोलीकर्ता को बोली की संपूर्ण धनराशि तत्काल जमा करनी होगी। साथ ही यह अनुबंध करना होगा कि साइकिल के लिए अधिकतम घ्5, मोटर साइकिल के लिए घ्10 तथा चार पहिया वाहन के लिए घ्20 से अधिक शुल्क नहीं लिया जाएगा। कर्मचारियों एवं अधिवक्ताओं के लिए दरों का निर्धारण पृथक से किया जाएगा।नीलामी को स्वी.त अथवा अस्वी.त करने का अंतिम अधिकार जिलाधिकारी गोण्डा के पास सुरक्षित रहेगा।

होटलों व मोटर गैराजों में चला चेकिंग अभियान, रोकथाम को लेकर किया जागरूक

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोन्डा। जनपद में बालश्रम को लेकर चेकिंग अभियान चला।जिसमे शासन द्वारा बाल और किशोर श्रम मुक्त अभियान,मानव तस्करी और तस्करी प्रवासी,बाल श्रम,भिक्षावृत्ति और बाल विवाह के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में पुलिस अधीक्षक विनीत जायसवाल के निर्देशानुसार एवं नोडल अधिकारी अपर पुलिस अधीक्षक पूर्वी मनोज कुमार रावत के कुशल मार्गदर्शन में थाना एएचटीयू टीम द्वारा थाना कोतवाली देहात व थाना/कस्बा वजीरगंज एवं नबाबगंज क्षेत्रांतर्गत संयुक्त जन–जागरूकता अभियान संचालित किया गया।इस अभियान में श्रम विभाग, चाइल्ड हेल्पलाइन, अपराजिता सामाजिक समिति एवं एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट जनपद गोण्डा की टीम सम्मिलित रही। अभियान का मुख्य उद्देश्य अनैतिक देह व्यापार, मानव तस्करी, भिक्षावृत्ति उन्मूलन तथा बाल श्रम की रोकथाम के संबंध में आमजन को जागरूक करना तथा "बचपन बचाओ, शिक्षा दिलाओ – पढ़ेगा भारत तभी बढ़ेगा भारत" संदेश का प्रसार करना रहा।इस दौरान अभियान 02 सेवा नियोजक द्वारा 02 नाबालिग बालक से बाल श्रम कराए जाने की पुष्टि हुई, जिनके विरुद्ध श्रम प्रवर्तन अधिकारी श्री सत्येन्द्र प्रताप द्वारा विधिक कार्यवाही करते हुए निरीक्षण टिप्पणी काटी गई।

एसडीएम नानपारा के नेतृत्व में अवैध अतिक्रमण पर गरजी जेसीबी

दैनिक बुद्ध का संदेश

बहराइच। नानपारा तहसील क्षेत्रान्तर्गत ग्राम इमामनगर गड़रहवा स्थित गाटा संख्या–280 रकबा 0.1900 है. जो कि राजस्व अभिलेखों में खलिहान के नाम दर्ज है तथा गाटा संख्या 68 जो कि राजस्व अभिलेखों में तालाब के नाम दर्ज है। जिस पर ग्राम के ही कुल 16 व्यक्तियों के द्वारा लंबे समय से उपरोक्त सरकारी भूमि पर पक्का निर्माण करके अवैध कब्जा कर रखा था। सरकारी भूमि पर हुए अवैध अतिक्रमण को उपजिलाधिकारी नानपारा मोनालिसा जौहरी के निर्देश पर नायब तहसीलदार नबाबगंज अक्षय पांडेय, राजस्व निरीक्षक सनाउल्लाह व क्षेत्रीय लेखपाल ने जे.सी.बी के माध्यम से ध्वस्त करवा दिया। ध्वस्तीकरण की कार्यवाही के दौरान दौरान एसएसबी व पुलिस बल मौके पर मौजूद रहा। तहसील प्रशासन की सख्त कार्रवाई से यह स्पष्ट संदेश क्षेत्र में गया है कि सरकारी संपत्ति पर अवैध कब्जा किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। एसडीएम नानपारा द्वारा लगातार सरकारी भूमि पर से अवैध अतिक्रमण हटवाए जाने पर क्षेत्र में अवैध अतिक्रमणकारियों में भय का माहौल है वही यह भी स्पष्ट हो गया है कि अब प्रशासन अभियान चलाकर अवैध अतिक्रमण पर कड़ी कार्यवाही कर रहा है। तहसील प्रशासन द्वारा स्पष्ट किया गया है कि सरकारी भूमि, तालाब, चकरोड एवं सार्वजनिक संपत्तियों पर किए गए सभी अवैध अतिक्रमण के विरुद्ध आगे भी अभियान जारी रहेगा। सरकारी भूमि पर अवैध अतिक्रमण को किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जायेगा।

सीडीओ ने पीएम श्री विद्यालय का किया औचक निरीक्षण,व्यवस्थाओं में सुधार के निर्देश

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोण्डा। जनपद की सीडीओ श्रीमती अंकिता जैन द्वारा पीएम श्री विद्यालय,राजकीय बालिका इंटर कॉलेज,गोण्डा का औचक निरीक्षण किया गया।निरीक्षण के दौरान विद्यालय की प्रधानाध्यापिका द्वारा अवगत कराया गया कि विद्यालय में वर्तमान में प्री–बोर्ड परीक्षाएँ संचालित की जा रही हैं।निरीक्षण के समय विद्यालय परिसर में काफी मात्रा में झाड़ियाँ उगी हुई पाई गईं।इस पर मुख्य विकास अधिकारी द्वारा जिला विद्यालय निरीक्षक एवं प्रधानाध्यापिका को परिसर की समुचित साफ–सफाई शीघ्र सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए गए।विद्यालय परिसर में निर्माणाधीन पाँच कक्षों के निरीक्षण के दौरान यह जानकारी दी गई कि विगत 2.3 माह से कार्यदायी संस्था द्वारा निर्माण कार्य बंद है।इस संबंध में जिला विद्यालय निरीक्षक को निर्देशित किया गया कि निर्माण कार्य तत्काल प्रारंभ कराते हुए नियमानुसार गुणवत्तापूर्ण कार्य पूर्ण कराया जाए।निरीक्षण के दौरान दिव्यांग शौचालय बंद पाया गया।प्रधानाध्यापिका द्वारा बताया गया कि यह शौचालय समग्र शिक्षा (माध्यमिक शिक्षा) योजना के अंतर्गत निर्मित है, किंतु अभी तक विद्यालय को हैंडओवर न होने के कारण बंद है।इस पर निर्देश दिए गए कि 03 दिवस के भीतर नियमानुसार शौचालय विद्यालय को हैंडओवर कराया जाए।विद्यालय परिसर में स्थापित अटल टिंकरिंग लैब का भी निरीक्षण किया गया,जिसमें कुछ उपकरण क्रियाशील तथा कुछ अक्रियाशील पाए गए।इस पर मुख्य विकास अधिकारी द्वारा कड़ी नाराजगी जताते हुए जिला विद्यालय निरीक्षक को निर्देशित किया गया कि अटल टिकरिंग लैब में बंद पड़े उपकरणों के क्रियाशील न होने के लिए बरती गई लापरवाही हेतु संबंधित कर्मी का उत्तरदायित्व निर्धारित करते हुए एक सप्ताह के भीतर सभी उपकरणों को नियमानुसार क्रियाशील कराना सुनिश्चित करें।

इंडियन बैंक आवास विकास शाखा के नव सुसज्जित परिसर का लोकार्पण

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोण्डा। जनपद में देश के प्रमुख राष्ट्रीय.त एवं जिले के अग्रणी बैंक इंडियन बैंक की आवास विकास शाखा, गोण्डा के नव सुसज्जित परिसर का लोकार्पण मंगलवार को डीएम प्रियंका निरंजन ने फीता काटकर किया। इस अवसर पर दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।कार्यक्रम में इंडियन बैंक गोण्डा के अंचल प्रमुख एवं सहायक महाप्रबंधक राजेश बडोरिया, उप अंचल प्रमुख संदीप कुमार सिन्हा,अग्रणी जिला प्रबंधक विनोद कुमार तिवारी सहित विशिष्ट ग्राहक एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।अंचल प्रमुख राजेश बडोरिया ने डीएम का स्वागत करते हुए कहा कि जिले का अग्रणी बैंक होने के नाते इंडियन बैंक का दायित्व है कि ग्राहकों को बेहतर सेवाएं और सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं। उन्होंने बताया कि सभी शाखाओं में तकनीकी आधारित सेवाओं के विस्तार एवं साज–सज्जा को और अधिक बेहतर करने की दिशा में निरंतर कार्य किया जा रहा है।डीएम प्रियंका निरंजन ने कहा कि इंडियन बैंक ग्राहकों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करने के लिए लगातार प्रयासरत है और आवास विकास शाखा का यह नया परिसर इसका उदाहरण है।ग्राहक संतुष्टि, सामाजिक दायित्वों की पूर्ति तथा वित्तीय और साइबर जागरूकता के प्रसार पर विशेष जोर दिया।इस दौरान सहायक महाप्रबंधक राजेश बडोरिया ने बताया कि शाखा में ग्राहकों की सुविधा के लिए आधुनिक ग्राहक लॉबी का भी निर्माण किया गया है, जिसका उद्घाटन इसी अवसर पर किया गया।अंत में शाखा प्रबंधक अमन श्रीवास्तव ने सभी अतिथियों एवं उपस्थितजनों के प्रति आभार व्यक्त किया।कार्यक्रम में अरुण कुमार,अमर सिंह मौर्य,आलोक कुमार,आशीष कुमार सिंह सहित अनेक अधिकारी एवं कर्मचारी मौजूद रहे।

विवाद में छोटे भाई पर हमला और बड़े भाई के परिवार पर हुआ मुकदमा

दैनिक बुद्ध का संदेश

बढ़नी/सिद्धार्थनगर। जमीनी विवाद ने एक परिवार को हिंसा के चक्रव्यूह में फंसा दिया है। थाना क्षेत्र ढेबरुआ के नगर पंचायत बढ़नी अन्तर्गत वार्ड गौला बाजार में बड़े भाई के परिवार ने छोटे भाई को बेरहमी से पीटकर लहूलुहान कर दिया। इस हमले में छोटे भाई को हाथ, चेहरे और सिर में गम्भीर चोटें आयी हैं, जिनका उपचार जिला मेडिकल कॉलेज में चल रहा है। पीड़ित की पत्नी रजनी अग्रहरि की तहरीर पर पुलिस ने बड़े भाई, भाभी और भतीजे सहित दो अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। वहीं पीड़ित रजनी ने बताया कि रविवार शाम जमीन के बंटवारे को लेकर विवाद हुआ था। इसी दौरान उनके पति दिनेश पर जेठ दुर्गेश, जेठानी पूनम, भतीजा निखिल और दो अज्ञात लोगों ने मिलकर हमला किया। आरोप है कि हमलावरों ने डण्डों और लात–घूसों से दिनेश को बुरी तरह पीटा, जिससे वह मौके पर गिर पड़े। शोर सुनकर आस–पास के लोग पहुंचे, लेकिन तब तक आरोपित फरार हो चुके थे। परिजन घायल को अस्पताल ले गये, जहां प्राथमिक उपचार के बाद गम्भीर हालत में जिला मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया। इस सम्बन्ध में थानाध्यक्ष ढेबरूआ नारायण लाल श्रीवास्तव ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है और आरोपितों के खिलाफ विधिक कार्रवाई की जायेगी।

गणतंत्र दिवस समारोह को हर्षोल्लास के साथ मनाये जाने को लेकर रूप–रेखा की गयी निर्धारित

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। जिलाधिकारी बी0एन0 सिंह ने अवगत कराया है कि गणतंत्र दिवस समारोह जनपद में गत वर्ष की भाति इस वर्ष भी हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा, दो पहिया एवं चार पहिया वाहनों पर गणतंत्र दिवस के अवसर पर तिरंगा झण्डा लगाएं जिससे गणतंत्र दिवस के उल्लास का माहौल बन सके, 26 जनवरी,2026 को प्रातःकाल 8. 30 बजे सरकारी भवनों पर राष्ट्रध्वज फहराया जायेगा, इस अवसर पर राष्ट्रगान के गायन के साथ ही संविधान में उल्लिखित संकल्प का स्मरण किया जाये। जिलाधिकारी ने बताया कि प्रातः 9.30 बजे पुलिस परेड, पुलिस लाइन में सम्पन्न होगा, पुलिस लाइन में परेड का सम्पूर्ण कार्यकम भव्य रूप से वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के कुशल संयोजन में प्रारम्भ होगा। प्रातः 10:00 बजे समस्त शिक्षण संस्थानों में राष्ट्रीय ध्वज फहराया जायेगा तथा राष्ट्रगान सामूहिक रूप से किया जायेगा। समस्त शिक्षण संस्थानों में इस अवसर पर ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए जिसमें राष्ट्रगान जन–गण–मन का सामूहिक गायन अवश्य हो। विद्यार्थियों को संक्षेप में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का इतिहास बताया जाय और सशक्त सैन्य बलों के बलिदान का नमन करते हुए देश भक्तों के जीवन के प्रेरक प्रसंग दोहराए जाय, जिससे राष्ट्रीय चेतना विकसित हो। अपरान्ह 01:00 बजे शहीद स्मारक ग्राम परासी दूबे एवं लोक निर्माण विभाग अतिथि गृह के सामने नेहरू पार्क में शहीदों की श्रद्धाजलि का कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा। पूर्वान्ह 11.00 बजे नगर पालिका द्वारा कम से कम 04 मलिन बस्तियों में विशेष सफाई अभियान चलाया जायेंगा। मलिन बस्तियों की भी गणतंत्र दिवस के अवसर पर विशेष सफाई व्यवस्था सुनिश्चित करायी जाये, गणतंत्र दिवस के पूर्व नगर एवं ग्रामीण अंचलों के समस्त मलिन बस्तियों की साफ–सफाई व्यवस्था सुनिश्चित करायी जाये। स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के परिजनों को सम्मानित किया जायेगा। दिन में शिक्षण संस्थाओं में खेद–कूद साइकिल रेस दंगल आदि का आयोजन किया जाये। इस संबंध में खेल विभाग द्वारा जारी किये गये आदेशों के अनुसार कार्यवाही की जाये। 26 जनवरी,2026 को स्वतंत्रता दिवस के अवसर प्रात 09:15 बजे से तियरा स्टेडियम में कास कन्ट्री रेस आयोजित की जायेगी उन्होंने बताया कि गणतन्त्र दिवस के अवसर पर जो भी प्रतियोगिता आयोजित की जाये उसमें सारगर्भित उद्बोधन किया जाये। इस मौके पर समस्त ग्राम प्रधानों को पत्र भेजकर सुनिश्चित कराएं कि गणतंत्र दिवस के अवसर पर समस्त ग्राम प्रधान अपने ग्राम पंचायतों में बैठक आहूत करते हुए ग्रामवासियों को आमंत्रित कर अपना सारगर्भित उद्बोधन दें। इसी प्रकार से समस्त शिक्षण संस्थानों में प्रधानाध्यापक द्वारा छात्रों के मध्य सारगर्भित उद्बोधन देते हुए संवैधानिक इतिहास तथा उसके विकास के बारें में अवगत कराया जाये। उन्होंने बताया कि जनपद में निवास करने वाले व्यक्ति अपने निजी भवनों व्यवसायिक प्रतिष्ठानों पर 25 व 26 जनवरी,2026 की रात्रि तक लाइटिंग कराएं। राजकीय भवनों पर दो दिन अर्थात 25 एवं 26 जनवरी 2026 को प्रकाश की व्यवस्था अवश्य करायी जाये। व्यापार मण्डल की तरफ से बाजारों में 100–200 मीटर की गैप के बाद टेन्ट लगवा कर वहां 26 जनवरी 2026 को प्रातः 5.00 बजे से देशभक्ति गीतों का प्रसारण कराया जाये। इस प्रकार कार्यक्रम समस्त उप जिलाधिकारी/तहसीलदारगण अपने–अपने तहसील के कस्बों में भी कराये।

दो दिवसीय ग्राम प्रधानों का प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

दैनिक बुद्ध का संदेश

करमा/सोनभद्र। स्थानीय विकास खंड सभागार में राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान योजना अंतर्गत दो दिवसीय ग्राम प्रधानों का प्रशिक्षण का समापन मंगलवार को खंड विकास अधिकारी गुरु शरण श्रीवास्तव द्वारा किया गया ।बी, डी, ओ, ने कहा कि डिजिटल साक्षरता से इ, ग्राम स्वराज जैसे पोर्टल पर काम करने की जानकारी मिलेगी और काम करने में सहूलियत मिलेगी।

मंडल ट्रेनर रोहित कुमार त्रिपाठी ने बताया कि इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य ग्राम प्रधानों को डिजिटल साक्षर बनाना तथा कार्यों में पारदर्शिता लाना है साथ ही साथ वर्तमान समय में इंटरनेट के माध्यम से हो रहे तरह–तरह के साइबर फ्रॉड से जागरूक करना है वहीं जिला ट्रेनर संजू कुशवाहा ने सरकार द्वारा दी जा रही योजनाओं का सही सदुपयोग करने पर विशेष बल दिया। इस अवसर पर विकास खंड करमा के ग्राम प्रधान रामानन्द , रामाज्ञा, मनोजकुमार, आनंद सिंह,ए डी ओ पंचायत बृजेश कुमार सिंह, प्रीति सिंह आदि मौजूद रहे।

पुलिस ने चोरी, नकबजनी एवं अन्य अपराधों की रोकथाम हेतु आपरेशन आल आउट के तहत संदिग्ध व्यक्ति/वस्तु/वाहनों की किया चेकिंग

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। एसएसपी सिद्धार्थनगर डॉ0 अभिषेक महाजन पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थनगर के आदेश के क्रम में एवं अपर पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थनगर प्रशान्त कुमार प्रसाद के निर्देशन में सोमवार की रात्रि को जनपद के समस्त क्षेत्राधिकारी/प्रभारी निरीक्षक/थानाध्यक्ष द्वारा ष्आपरेशन आल आउटष् के तहत ठण्ड के मौसम में चोरी, नकबजनी एवं अन्य अपराधों की रोकथाम हेतु सुरक्षा एवं सतर्कता को सु.ढ़ बनाए रखने के लिए अपने–अपने सर्किल/थाना क्षेत्रों में पड़ने वाले चिह्नित हॉट स्पाट एवं उसके आस–पास के क्षेत्रों में संदिग्ध व्यक्ति/वस्तु/वाहनों की चेकिंग किया गया। इस अभियान का उद्देश्य अपराधों की रोकथाम और सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत बनाना है। इस अभियान में संबंधित क्षेत्राधिकारी/थाना प्रभारी, चौकी प्रभारी एवं उनकी टीमों द्वारा अपने–अपने क्षेत्र में अलग–अलग महत्वपूर्ण प्वाइन्ट्स पर सघन चेकिंग अभियान चलाया गया। वाहनों के सभी दस्तावेजों की सघन जांचकर ठण्ड के मौसम में सक्रिय होने वाले चोर–उचक्कों, नकबजनी करने वाले गिरोहों एवं अन्य असामाजिक तत्वों पर पैनी नजर रखी जा रही है। इस दौरान लोगों से अपील भी किया कि वे अपने आस–पास की गतिविधियों पर नजर रखें और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तत्काल निकटतम थाने या डॉयल–112 पर दें।

01 अन्तर्राज्यीय अवैध शराब तस्करी का अभियुक्त गिरफ्तार

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक के निर्देशन तथा अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय एवं क्षेत्राधिकारी पिपरी के कुशल मार्गदर्शन में जनपद में अवैध मादक पदार्थों की तस्करी एवं बिक्री के विरुद्ध चलाए जा रहे विशेष अभियान के क्रम में प्रभारी निरीक्षक पिपरी सत्येन्द्र कुमार राय द्वारा थाना पिपरी क्षेत्रान्तर्गत संदिग्ध व्यक्ति/वाहन चेकिंग के दौरान हाईटेक तिराहा पर मौजूद रहते हुए मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि खाड़पाथर, थाना हाथीनाला के जंगल मुख्य मार्ग से होकर मंगलवार को समय लगभग 12.40 बजे एक कंटेनर के माध्यम से झारखण्ड के रास्ते रांची अवैध अंग्रेजी शराब ले जाई जा रही है। प्राप्त सूचना पर तत्परता दिखाते हुए पुलिस टीम द्वारा कार्रवाई करते हुए एक अभियुक्त श्रवण कुमार पुत्र चौनाराम निवासी रूपसर बलाड़, तहसील पोखरण, थाना फलसून्ड, जिला जैसलमेर (राजस्थान), उम्र लगभग 33 वर्ष को गिरतार किया गया। गिरतार अभियुक्त के कब्जे से कंटेनर में लदी 1019 पेटी में कुल 23,508 शीशी अवैध अंग्रेजी

शराब (कुल मात्रा 9088.02 लीटर), जिसकी अनुमानित कीमत लगभग 82 लाख रुपये है, एक अदद कंटेनर जिसकी कीमत लगभग 35 लाख रुपये, 01 अदद एंड्रॉयड मोबाइल फोन तथा जामा तलाशी से 950 रुपये नगद बरामद किए गए। बरामदगी एवं गिरतारी के आधार पर थाना पिपरी जनपद सोनभद्र पर मु0अ0सं0– 13/2026 धारा 318(4), 338, 336(3), 340(2), 61(2) बीएनएस व 60, 63, 72 आबकारी अधिनियम के अंतर्गत अभियोग पंजी.त कर अभियुक्त को विधिक कार्रवाई पूर्ण करते हुए न्यायालय भेजा गया। पूछताछ के दौरान वाहन चालक अभियुक्त श्रवण कुमार पुत्र चौनाराम निवासी रूपसर बलाड़, तहसील पोखरण, थाना फलसून्ड, जिला जैसलमेर राजस्थान ने अवैध शराब परिवहन के संबंध में बताया कि प्रवीण कुमार निवासी रोहतक, हरियाणा द्वारा कंटेनर ट्रक में भरी अंग्रेजी शराब के पैकेट नाकोदर गांव के पास, लुधियाना क्षेत्र से उपलब्ध कराए जाते थे तथा निर्देश दिए जाते थे कि उक्त शराब से लदे कंटेनर को झारखण्ड रांची के रास्ते बिहार ले जाया जा रहा है। अभियुक्त ने बताया कि प्रवीण कुमार उससे व्हाट्सएप कॉल के माध्यम से लगातार संपर्क में रहता था तथा इस बार वह वाराणसी तक उसके साथ आया भी था। प्रवीण कुमार ने बताया था कि रांची पहुंचने पर वह एक व्यक्ति को भेजेगा, जो कंटेनर लेकर बिहार जाएगा तथा बिहार में कंटेनर खाली होने के बाद अभियुक्त को फोन किया जाएगा, जिसके पश्चात वह वहां पहुंचकर कंटेनर ले जाएगा और उसे मेहनताना के रूप में 50,000 रुपये वहीं प्राप्त होंगे। अभियुक्त ने यह भी बताया कि प्रवीण कुमार के कहने पर वह कंटेनर जिसे निर्देश मिलता उसी व्यक्ति को सौंप देता था तथा इससे पूर्व भी वह प्रवीण कुमार द्वारा उपलब्ध कराए गए कंटेनरों को लगभग 5.6 बार रांची तक ले जा चुका है। अभियुक्त ने यह स्वीकार किया कि जानबूझकर वाहन पर फास्टैग नहीं लगाया जाता था ताकि टोल टैक्स के माध्यम से वाहन की पहचान न हो सके। सकुशल शराब की खेप पहुंचाने पर उसे प्रति चक्कर 50,000 रुपये मिलते थे, जिससे उसकी आजीविका चलती थी, जबकि प्रवीण कुमार अवैध शराब तस्करी से भारी मुनाफा कमाता था।

महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा हेतु सोनभद्र पुलिस का सघन जन-संवाद कार्यक्रम

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा, सम्मान और आत्मनिर्भरता को सु.ढ़ करने के उद्देश्य से मिशन शक्ति अभियान 5.0 के अंतर्गत में पुलिस द्वारा व्यापक एवं प्रभावी जन–जागरूकता अभियान संचालित किया गया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँच बनाते हुए महिलाओं एवं बालिकाओं को उनके कानूनी अधिकारों, सुरक्षा उपायों तथा पुलिस द्वारा उपलब्ध सहायता संसाधनों की जानकारी देना रहा। पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा के निर्देशन एवं क्षेत्राधिकारी यातायात डॉ. चारु द्विवेदी सहायक नोडल अधिकारी मिशन शक्ति 5.0' के नेतृत्व में जनपद के समस्त थानों की मिशन शक्ति टीमों द्वारा विद्यालयों, महाविद्यालयों, सार्वजनिक स्थलों, बाजारों एवं प्रमुख चौराहों पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। जागरूकता कार्यक्रमों के दौरान महिलाओं एवं बालिकाओं को साइबर अपराधों से बचाव, घरेलू हिंसा, छेड़छाड़, कार्यस्थल पर उत्पीड़न जैसे विषयों पर विस्तार से जानकारी दी गई। साथ ही, आपात परिस्थितियों में त्वरित पुलिस सहायता प्राप्त करने की प्रक्रिया, उपलब्ध हेल्पलाइन सेवाओं तथा आत्मरक्षा से संबंधित उपयोगी एवं व्यावहारिक सुझाव भी प्रदान किए गए। महिलाओं को बिना भय पुलिस से संपर्क करने एवं किसी भी प्रकार की घटना की सूचना तत्काल देने हेतु प्रेरित किया गया। पुलिस जनसामान्य से अपील करती है कि महिलाओं एवं बालिकाओं से संबंधित किसी भी आपात स्थिति अथवा अपराध की सूचना तुरंत नजदीकी पुलिस थाना या हेल्पलाइन नंबरों पर दें। महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान एवं विश्वास बनाए रखना पुलिस की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

लकड़ी काटने गये मजदूरों को मारा पीटा: एसपी से लगाया न्याय की गुहार

दैनिक बुद्ध का संदेश

बस्ती। नगर थाना क्षेत्र के देवापार निवासी हरिनाथ पुत्र वीरेन्द्र कुमार और बनकटवा निवासी संजय कुमार पुत्र राम अवध ने पुलिस अधीक्षक को पत्र और जन सुनवाई पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराकर पेड काटने के विवाद में दबंगों द्वारा मारने पीटने, जाति सूचक गालियां देने के मामले में न्याय की गुहार लगाया है। हरिनाथ और संजय कुमार ने एसपी को दिये पत्र मे कहा है कि वे गरीब और दलित परिवार से हैं। लकड़ियां काटकर अपने परिवार का गुजर बसर करते हैं। रिंग रोड ठेकेदार पप्पू सिंह के कहने पर वे लालगंज थाना क्षेत्र के बनकटा में लकड़ी काटने के लिये गये थे। गत 13 जनवरी की सुबह लकड़ी काटने के दौरान बब्लू यादव उर्फ दयाशंकर यादव पुत्र परशुराम यादव, बुधई यादव, अमरजीत यादव आदि ने लकड़ी काटने से रोका और जाति सूचक गालियां देते हुये बुरी तरह से मारा पीटा। धमकी दिया कि शिकायत करोगे तो जान से मार डालेंगे। किसी तरह से लोगों के आ जाने पर उनकी जान बची। घटना की सूचना 112 नम्बर पर देने के साथ ही लालगंज थाने पर दिया किन्तु पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं किया। मांग किया कि दोषियों के विरूद्ध मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई कराने के साथ ही उनके जान माल की रक्षा कराया जाय।

विधायक भूपेश चौबे ने बेठिगांव संपर्क मार्ग का किया शिलान्यास

दैनिक बुद्ध का संदेश

सोनभद्र। सदर विकास खंड क्षेत्र के बेठिगांव संपर्क मार्ग का मंगलवार को सदर विधायक भूपेश चौबे ने शिलान्यास किया। लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को सड़क का निर्माण कार्य जल्द शुरू करने का निर्देश दिया। इस दौरान उन्होंने मुख्यमंत्री आवास योजना व आयुष्मान योजना के लाभार्थियों में प्रमाण पत्र एवं कार्ड वितरित किया। इस दौरान उपस्थित जनता को संबोधित करते हुए सदर विधायक ने कहा कि केंद्र और प्रदेश की भाजपा सरकार पढ़ाई से लेकर दवाई तक छत से लेकर इज्ज़त तक सबका ख्याल रख रही है। पहले लोग इलाज के अभाव में दम तोड़ते थे, पैसे के अभाव में गरीब पढ़ नहीं पाता था और बहन बेटियां खुले में घूम नहीं सकती थी।

अब सरकार लोगों के इलाज के लिए इंतजाम कर रही है, सुरक्षा का माहौल है। गरीबों को मुत में अनाज तो किसानों को सम्मान निधि मिल रही है। मनरेगा योजना का जिक्र करते हुए कहा कि वर्तमान में जो रोजगार 100 दिन का मिलता था उसे भाजपा सरकार ने 125 दिन का किया। ऐसे में मजदूरों को लाभ होगा। अब बिचौलिए धन को नहीं हड़प पाएंगे। कहा कि आपकी भाजपा सरकार आयुष्मान कार्ड के जरिए गंभीर बीमारी से पीड़ित लोगों के लिए 5 लाख तक की व्यवस्था की है, अब किसी भी गरीब व्यक्ति की मौत पैसे के अभाव में नहीं होगी। बेठिगांव ग्राम पंचायत के प्रधान प्रतिनिधि अनूप त्रिपाठी ने कहा कि रॉबर्ट्सगंज–रामगढ़ मार्ग से बेठिगांव संपर्क मार्ग की हालत अत्यंत जर्जर व दयनीय हो गई थी।

सदर विधायक के प्रयास से इस सड़क को विशेष मरम्मत के लिए प्रस्तावित किया गया। इसके लिए शासन से बजट भी निर्गत हो गया। इस सड़क के बनने से क्षेत्र के बेठिगांव, सिरपालपुर के साथ ही करारी, अमौली सहित अन्य गांवों के लोगों का आवागमन सुगम हो जाएगा। इससे पहले सड़क का भूमि पूजन आचार्य विशाल शास्त्री ने विधि विधान से कराया। खंड विकास अधिकारी लालजी शुक्ला ने सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। साथ ही अपना नंबर भी ग्रामीणों से साझा किया। ग्राम प्रधान प्रतिनिधि अनूप तिवारी ने विधायक एवं खंड विकास अधिकारी का माल्यार्पण एवं अंगवस्त्र भेंटकर स्वागत किया। बीडीसी योगेश कुशवाहा, कोटेदार बबलू केशरी ने भी स्वागत किया।

इस मौके पर रामचंद्र त्रिपाठी, विकाश मिश्रा, पंकज मिश्रा, लसड़ा प्रधानपति विमलेश पांडेय, हरिप्रसाद चौबे, राजबली, हीरालाल, योगेंद्र तिवारी, विजय कुमार कनौजिया बबलू पुष्पा तिवारी कौशल्या धर्मेंद्र हीरालाल खरपटु सावित्री देवी सीता छोटे रीना देवी लोक निर्माण विभाग के जेई रवि मौर्या, ग्राम पंचायत अधिकारी आदि उपस्थित रहे।

सब्जी कारोबार करने वाले युवक ने होमगार्ड जवानों पर मारपीट करने का लगाया आरोप

दैनिक बुद्ध का संदेश

बढ़नी/सिद्धार्थनगर। थाना क्षेत्र ढेबरूआ के पुलिस चौकी बढ़नी अन्तर्गत ड़ढ़ऊल गांव निवासी शेषराम यादव उर्फ वीरु ने

मंगलवार को दिन में 112 नम्बर डायल कर पुलिस को सूचना दर्ज कराते हुए दो होमगार्डों पर मारपीट करने का आरोप लगाया है। पीड़ित ने स्थानीय पुलिस को लिखित शिकायती पत्र देकर बताया कि वह ठेले पर रखकर सब्जी बेचने का कारोबार करता है। सोमवार की बीती रात करीब एक बजे ट्रेन पकड़ने के लिए रेलवे स्टेशन बढ़नी जा रहा था। अभी वह नगर पंचायत बढ़नी एनएच 730 समय माता स्थान पर पहुंचा ही था कि रात में ड्यूटी कर रहे दो होमगार्ड जवानों ने रोक लिया और बदसलूकी करने लगे, होमगार्ड के जवानों पर अकारण मारपीट, गाली–गलौच श्चोरश् कहकर पीटने और गालियां देने का आरोप लगाया है। पीड़ित के कथनानुसार जब उन्होंने सब्जी लेने जाने की बात कही, तो होमगार्डों ने उन्हें श्चोरश् कहकर सम्बोधित किया। विरोध करने पर जवानों ने उनके साथ हिंसक मारपीट शुरू कर दी। पीड़ित के मुताबिक, उन्हें लात–घूंसों से पीटा गया, जिससे उनके हाथ, कमर और पैर में गम्भीर चोटें आई हैं। पिटाई से मेरा बायां हाथ नहीं उठ रहा है। इतना ही नहीं आरोप है कि होमगार्डों ने उनके परिवार की महिलाओं के लिए अत्यन्त अभद्र भाषा और गालियों का प्रयोग किया। पीड़ित ने पुलिस को प्रार्थना पत्र लिखकर दोषियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही करने और न्याय प्रदान करने की मांग की है। रात के अन्धेरे में राहगीरों के साथ इस तरह के व्यवहार ने स्थानीय पुलिस प्रशासन की कार्यशैली पर सवाल खड़े कर दिये हैं। उक्त सम्बन्ध में थाना प्रभारी ढेबरुआ का कहना है कि मामला संज्ञान में आया है, शिकायती पत्र के आधार पर मामले की जांच कराकर उचित कार्रवाई की जायेगी।

जमीनी विवाद, मारपीट के मामले में 5 नामजद, 60 अज्ञात महिला पुरूषों पर मुकदमा दर्ज

दैनिक बुद्ध का संदेश

बस्ती। पुरानी बस्ती पुलिस ने कोतवाली थाना क्षेत्र के खीरीघाट निवासी अरुण कुमार पुत्र बसन्त की तहरीर पर जमीनी विवाद और मारपीट के मामले में 5 नामजद और 60 से अधिक अज्ञात महिलाओं व पुरूषों के विरूद्ध बीएनएस की धारा 191 (2), 115 (2), 352, 351 (3), 308 (8) आदि की धाराओं में मुकदमा पंजी.त किया है। अरुण कुमार ने पुलिस को दिये तहरीर में कहा है कि वह अनुसूचित जाति का व्यक्ति है, उसने पाण्डेय बाजार बांसी रोड पर जमीन खरीदी है यहां आस–पास खटिक बिरादरी के लोग है जिसमें कुछ लोग बहुत मनबढ़ तथा बदमाश किस्म के व्यक्ति है । उक्त लोग जमीन सस्ते में लेने की बात कहते हुए डरा धमकाकर पैसे की मांग किगया। भय में आकर उसने रवि उर्फ भूते, गोलू पुत्रगण पन्नेलाल, मेहीलाल पुत्र छोटेलाल, राकेश उर्फ प्याजी. मुकेश पुत्रगण मेहीलाल को दो लाख रूपये दो वर्ष पहले दे दिया उक्त लोग उससे नकद पैसा लिए थे धीरे– धीरे उनकी लालच बढ़ती गयी। जब उसने पैसा देने से इन्कार कर दिया तो उन लोगों ने पाण्डेय बाजार आने पर जान से मारने की धमकी दिया। कुछ माह पूर्व मेहीलाल व उनके परिवार के लोगों ने मिलकर उसकी कुछ जमीन पर कब्जा कर लिया जिस पर सुलह समझौते में कुछ रूपया लेकर जमीन उन्हे बैनामा करने के लिए तैयार हो गया लेकिन तय पैसा न देने के कारण रजिस्ट्री नहीं किया। वह पाण्डेय बाजार स्थित फर्म निशान्त ट्रेडर्स पर बैठकर अपनी जमीन की देखभाल करने लगा जिससे उक्त फर्म के मालिक निशान्त जायसवाल से भी वो लोग रंजिश रखने लगे । दिनांक 17 जनवरी को जब वह पाण्डेय बाजार स्थित स्टेट बैंक के नीचे खड़ा था तभी रवि उर्फ भूते, गोलू पुत्रगण पन्नेलाल, राकेश उर्फ प्याजी पुत्र मेहीलाल लोग आकर हथियार दिखाकर उसको चारो तरफ से घेर कर कैद कर लिए और छः लाख रूपये की मांग करने लगे रूपया न देने पर मारने और नंगा करने की धमकी दिये। उसने मामले में दोषियो के विरूद्ध कार्रवाई और अपने परिवार, जमीन के रक्षा की गुहार लगाया है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक:- श्रीमती पुष्पा शर्मा द्वारा बुद्धा प्रिन्टर्स, ज्योति नगर मधुकरपुर, निकट-हीरो होण्डा एजेन्सी, जनपद-सिद्धार्थनगर (उ0प्र0) 272207 से मुद्रित एवं मकान नं. 203 निकट बी.एस.एन.एल. टावर खलवा मोहल्ला, नगर पालिका परिषद बलरामपुर, जनपद- बलरामपुर, उ0प्र0-271201 से प्रकाशित । आर.एन.आई. नं0- UPHIN/2021/86502 । सम्पादक- राजेश कुमार शर्मा

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट. के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन समस्त विवाद जनपद-सिद्धार्थनगर न्यायालय के अधीन ही मान्य होगा।

बॉर्डर 2 धमाका! रिलीज से पहले ही बॉक्स ऑफिस पर सुनामी, एडवांस बुकिंग में टूटा नियमों का घेरा!

भारतीय सिनेमा के इतिहास की सबसे प्रतिष्ठित वॉर फिल्म श्बॉर्डरश का सीक्वल श्बॉर्डर 2श इस शुक्रवार सिनेमाघरों में दस्तक देने के लिए तैयार है। फिल्म को लेकर दर्शकों के बीच जिस तरह का उन्माद देखा जा रहा है, उसने बॉक्स ऑफिस पंडितों को भी हैरान कर दिया है। फिल्म के शुरुआती रिएक्शन और टिकटों की बुकिंग को लेकर एक बड़ी अपडेट सामने आई है। अभी तक, देश की बड़ी चेन (च्टप्छव और सिनेपोलिस) में वरुण धवन, दिलजीत दोसांझ, अहान शेट्टी, सनी देओल जैसे कलाकारों वाली और अनुराग सिंह द्वारा डायरेक्टेड इस वॉर फिल्म के ओपनिंग शो के लिए लगभग 10,000 टिकट बिक चुके हैं। ठववाडलैीवू के अनुसार, लगभग 20,000 टिकट भी बिक चुके हैं।

प्रोडक्शन टीम ने 23 जनवरी को रिलीज होने वाली बॉर्डर 2 के जबरदस्त रिस्पॉन्स को देखते हुए पहले ही एडवांस बुकिंग शुरू कर दी है, और यह रिस्पॉन्स बहुत अच्छा रहा है। बदपसा की एक रिपोर्ट के अनुसार, बॉर्डर 2 लगभग 48,000 टिकट बेचने में कामयाब रही है और इसने 1.55 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया है। इसमें ब्लॉक सीटें भी शामिल हैं, जो 5. 85 करोड़ रुपये की हैं।

स्टार–स्टडेड बॉर्डर 2 कास्ट दर्शकों की दिलचस्पी बढ़ा रही है

सनी देओल पिछली फिल्म से अपनी हीरो वाली इमेज बनाए हुए हैं, वरुण धवन पहली बार एक इंटेंस रोल निभा रहे हैं, दिलजीत दोसांझ पहली बार स्क्रीन पर सनी और वरुण के साथ काम कर रहे हैं, अहान शेट्टी फिल्म में एक नई जान डाल रहे हैं, सोनम बाजवा फिल्म में एलिगेंस का टच दे रही हैं, जबकि मोना सिंह एक अहम रोल निभा रही हैं।

बॉर्डर 2 किस बारे में है और उम्मीदें क्यों ज़्यादा हैं

दर्शक इन ऑफिसर्स के बीच मजबूत बॉन्ड को देखने के लिए काफी एक्साइटेड हैं, जो स्टारडम के बावजूद देश को सबसे पहले रखते हैं। कहानी 1971 के भारत–पाकिस्तान युद्ध पर आधारित है और इसमें किरदारों के बीच संघर्ष, बलिदान और बॉन्डिंग को दिखाया गया है, साथ ही कुछ शानदार साउथ–इंडियन–स्पेशल–इफेक्ट्स भी हैं जो मॉडर्न सेटिंग में उन्हीं एलिमेंट्स को दिखाते हैं। अक्षय कुमार के रफ्तार का कमाल, सुरक्षा वाहन से टकराया ऑटो, हादसे में एक शख्स गंभीर रूप से घायल

अक्षय कुमार के काफिले पर रफ्तार का कहर, सुरक्षा वाहन से टकराया ऑटो, हादसे में एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल

पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। अन्य वाहन द्वारा टक्कर मारे जाने के बाद ऑटो रिक्शा अभिनेता के सुरक्षा काफिले में शामिल एक कार से टकरा गया। विदेश यात्रा के बाद अपनी पत्नी ट्विंकल खन्ना के साथ हवाई अड्डे से घर लौट रहे कुमार

की कार इस दुर्घटना में शामिल नहीं थी।

बॉलीवुड के शखिलाड़ीश अक्षय कुमार के सुरक्षा काफिले के साथ मंगलवार को मुंबई में एक सड़क दुर्घटना हो गई। अभिनेता के काफिले में शामिल एक सुरक्षा वाहन की चपेट में आने से एक ऑटो–रिक्शा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया है। इस घटना में ऑटो चालक को गंभीर चोटें आई हैं, जिसे तुरंत अस्पताल पहुँचाया गया।

पुलिस ने सोमवार को यह जानकारी दी। अन्य वाहन द्वारा टक्कर मारे जाने के बाद ऑटो रिक्शा अभिनेता के सुरक्षा काफिले में शामिल एक कार से टकरा गया। विदेश यात्रा के बाद अपनी पत्नी ट्विंकल खन्ना के साथ हवाई अड्डे से घर लौट रहे कुमार की कार इस दुर्घटना में शामिल नहीं थी। पुलिस के अनुसार, ऑटो रिक्शा को एक तेज रफ्तार मर्सिडीज कार ने टक्कर मार दी, जिसके कारण वह कुमार के सुरक्षा काफिले में शामिल वाहन से टकरा गया।

इसने बताया कि इस दुर्घटना में ऑटो रिक्शा चालक घायल हो गया और उसे इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया। अधिकारियों ने बताया कि जुहू पुलिस ने मर्सिडीज चालक के खिलाफ लापरवाही और तेज गति से वाहन चलाने का मामला दर्ज किया है तथा जांच जारी है।

पुलिस की कार्रवाई

मुंबई पुलिस ने मौके पर पहुंचकर दुर्घटनाग्रस्त वाहनों को कब्जे में ले लिया है। पुलिस अब सीसीटीवी फुटेज की जांच कर रही है ताकि यह पता लगाया जा सके कि गलती किसकी थीकृ काफिले की गाड़ी की रफ्तार ज्यादा थी या ऑटो चालक ने गलत दिशा से आने की कोशिश की थी।

एमपी के भिंड में विराजते हैं डॉक्टर हनुमान, नृत्य मुद्रा वाली मूर्ति के आगे लगती है भक्तों की भीड़

हमारे देश को मंदिरों और देवताओं का देश माना जाता है। इन मंदिरों में विभिन्न संस्कृतियों के हिसाब से पूजा–पाठ होता है। वहीं देश में हनुमान जी के कई अदभुत और चमत्कारी मंदिर मौजूद हैं। कलियुग में हनुमान जी को चमत्कारी देवता के रूप में पूजा जाता है। वहीं माना जाता है कि आज भी हनुमान जी कहीं न कहीं किसी रूप में मौजूद हैं। कलियुग के चमत्कारी मंदिरों में एक ऐसा ही मंदिर मध्य प्रदेश के भिंड जिले में मौजूद है।

माना जाता है कि भिंड के इस मंदिर में बजरंगबली को एक डॉक्टर के रूप में पूजा जाता है। इस मंदिर की मान्यता है कि यहां पर बड़ी से बड़ी बीमारी वाला मरीज भी मिनटों में ठीक हो जाता है। इस चमत्कारी मंदिर के बारे में जानकर आपको भी हैरानी होगी। दरअसल, मध्य प्रदेश के भिंड जिले में हनुमान जी का फेमस मंदिर दंदरौआ धाम है। इस मंदिर में हनुमान जी को एक डॉक्टर के रूप में पूजा जाता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको इस मंदिर के रहस्य और इससे जुड़ी मान्यताओं के बारे में बताने जा रहे हैं।

डॉक्टर हनुमान मंदिर की कहानीः हनुमान जी के इस अनोखे मंदिर को लेकर ऐसी मान्यताएं हैं कि मंदिर में मौजूद हनुमान जी खुद अपने एक भक्त का इलाज करने के लिए यहां डॉक्टर बनकर पहुंचे थे। माना जाता है कि हनुमान जी का एक भक्त साधु शिवकुमार दास था। जोकि कैंसर की बीमारी से जूझ रहा था। उस भक्त को हनुमान जी ने मंदिर में डॉक्टर के रूप में दर्शन दिए थे। जिसके बाद साधु एकदम ठीक हो गया था। वहीं हनुमान जी का स्वरूप ऐसा था कि वह गले में आला डाले थे और डॉक्टर वाले सफेद कोट में थे। उनके दर्शन मात्र से साधु एकदम ठीक हो गया था। तभी से मान्यता है कि मंदिर में बजरंग बली डॉक्टर के रूप में मौजूद रहते हैं और भक्तों की बीमारियों को ठीक करते हैं।

कहां है ये मंदिरः मध्य प्रदेश के ग्वालियर शहर से करीब 70 किमी दूर डॉक्टर हनुमान मंदिर है। इसको दंद रोवा सरकार धाम मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। इस मंदिर को डॉक्टर हनुमान मंदिर भी कहा जाता है। इस मंदिर में हनुमान जी की डॉक्टर के रूप में पूजा की जाती है। इस मंदिर में हनुमान जी की एकमात्र ऐसी मूर्ति है, जिसमें हनुमान जी को नृत्य करते हुए दिखाया गया है। माना जाता है कि हनुमान जी की कृपा से टीबी, कैंसर और अन्य गंभीर बीमारियां भी ठीक हो जाती हैं। जिस कारण हर मंगलवार और शनिवार को लाखों भक्त मंदिर में दर्शन के लिए आते हैं।

डॉक्टर के रूप में होती है पूजा

धार्मिक मान्यता है कि जिस तरह से मरीजों की हर बीमारी को डॉक्टर दूर करता है, उसी तरह से हनुमान जी भी अपने भक्तों की सभी बीमारियों को दूर कर देते हैं। वहीं इस मंदिर की अनोखी बात यह है कि यहां पर हनुमान जी की सफेद कोट पहने डॉक्टर के रूप में पूजा की जाती है। वहीं भक्त भी उनको डॉक्टर हनुमान जी कहकर बुलाते हैं। लोगों की भी यह मान्यता है कि हनुमान जी इस मंदिर में अपने भक्तों के शरीर के अलावा मन और आत्मा का भी इलाज करते हैं। यह मंदिर भक्तों को उनकी मानसिक पीड़ा से बाहर आने में मदद करता है। कई मान्यताएं हैं कि इस मंदिर में दर्शन करने मात्र से बड़ी से बड़ी और लाइलाज बीमारी भी ठीक हो जाती है।

सुबह की ये 5 जादुई ड्रिंक्स बढ़ाएंगी आपका मेटाबॉलिज्म, दिनभर रहेंगे पूरे दिन तरोताजा और ऊर्जावान

आजकल लोग हेल्दी डाइट पर ज्यादा ध्यान देते हैं। हर कोई हेल्दी रहना प्रायोरिटी में शामिल कर रहे हैं। लोग अपनी डाइट से लेकर लाइफस्टाइल तक कई छोटे–बड़े बदलाव करते हैं। इसलिए सुबह की शुरुआत में पहला गिलास काफी हद तक यह तय करता है कि आपका दिन कैसा गुजरेगा। अधिकतर लोग सुबह साधारण पानी पीते हैं, लेकिन अगर इसकी जगह कुछ खास हेल्दी ड्रिंक्स को अपनी दिनचर्या में शामिल किया जाए, तो ये सेहत पर कई गुना बेहतर असर डाल सकती हैं। ऐसी मॉर्निंग ड्रिंक्स न सिर्फ मेटाबॉलिज्म को तेज करती हैं, बल्कि शरीर को जरूरी पोषण देकर एनर्जी लेवल भी बढ़ाती हैं। आइए जानते हैं 5 ऐसी खास सुबह की ड्रिंक्स के बारे में, जो आपको पूरे दिन तरोताजा और ऊर्जावान बनाए रख सकती हैं।

नारियल पानीः सुबह की शुरुआत नारियल पानी पीने से दिन अच्छा जाता है। यह कैल्शियम, मैग्नीशियम और पोटेशियम का अच्छा स्रोत है। सुबह–सुबह नारियल पानी पीने से शरीर हाइड्रेटेड रहता है और दिन भर फ्रेशनेस बनी रहती है।

ग्रीन टीः ग्रीन टी में प्रचुर मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते हैं, जो शरीर के मेटाबॉलिज्म को सक्रिय करने में सहायक होते हैं। यह वजन को संतुलित रखने के लिए एक अच्छा ऑप्शन माना जाता है। रोज सुबह एक कप ग्रीन टी पीने से शरीर में गर्माहट बनी रहती है और साथ ही एनर्जी व एकाग्रता में भी सुधार होता है।

वेजिटेबल जूसः यदि आप सुबह की शुरुआत एक कप कॉफी पीते करते हैं, लेकिन थकान दूर नहीं हुई, तो पालक, केल जैसी हरी पत्तेदार सब्जियों का जूस पिएं। क्योंकि इसमें भरपूर मात्रा में आयरन होता है, जो शरीर को एनर्जी देता है और थकान कम करता है।

एलोवेरा जूसः एलोवेरा जूस केवल स्किन के लिए नहीं, बल्कि पेट के लिए भी फायदेमंद माना जाता है। इसमें सूजन कम करने वाले गुण होते हैं, जो पइे जैसी समस्याओं से राहत दिलाते हैं और गैस–अपच जैसी परेशनियों को भी दूर रखते हैं। अदरक वाली चायः अक्सर लोग सुबह की शुरुआत एक कप अदरक की चाय से भी करते हैं, जो सेहत के लिए बेहद फायदेमंद साबित होता है। इसे पीने से मतली और उल्टी जैसी समस्या कम होती है। इसमें उबले पानी में कद्दूकस किया अदरक डालकर पांच मिनट तक छोड़ दें। यह पेट को हल्का और एनर्जी को बढ़ाता है।

टमाटर का जूसः अगर शरीर में डिहाइड्रेशन हो या हैंगओवर की परेशानी महसूस हो रही हो, तो टमाटर का जूस एक बेहतरीन विकल्प साबित होता है। इसमें करीब 95 प्रतिशत पानी मौजूद होता है, जो शरीर को तेजी से हाइड्रेट करता है। इसके अलावा, यह हैंगओवर से जुड़ी थकान और अन्य लक्षणों को कम करने में भी मददगार होता है।